गुप्त-ग्रन्थावली संख्या १४.

॥ श्रीः ॥

पन्नाराज्य का इतिहास ।

मूल्य =)

बाबूश्रीरामकृष्णाख्यवर्म्मणः करकुड्मले ।
ग्रंथस्यास्याधिकारोयं निहितो ग्रंथकर्त्तृभिः ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

PANNA-RAJYA
KA
ITIHAS.

TRANSLATED

FROM BENGALI INTO HINDI

BY

BABU GANGAPRASAD GUPT,

SON OF

BABU MATA PRASAD, M. A.

FELLOW OF THE

Chemical Society of London; Late Professor of Mathematics and Science of the Bareilly-College, Bareilly; Present Hony. Professor

OF

Chemistry, C. H. College, Benares;

AND—

PROPRIETOR OF THE FIRM OF

MESSRS. SHEONANDAN PRASAD MATAPRASAD.

OF

BENARES, ALLAHABAD, CAWNPUR, DELHI AND MURADABAD.

BENARES.

Bharat-jiwan Press.

1904.

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

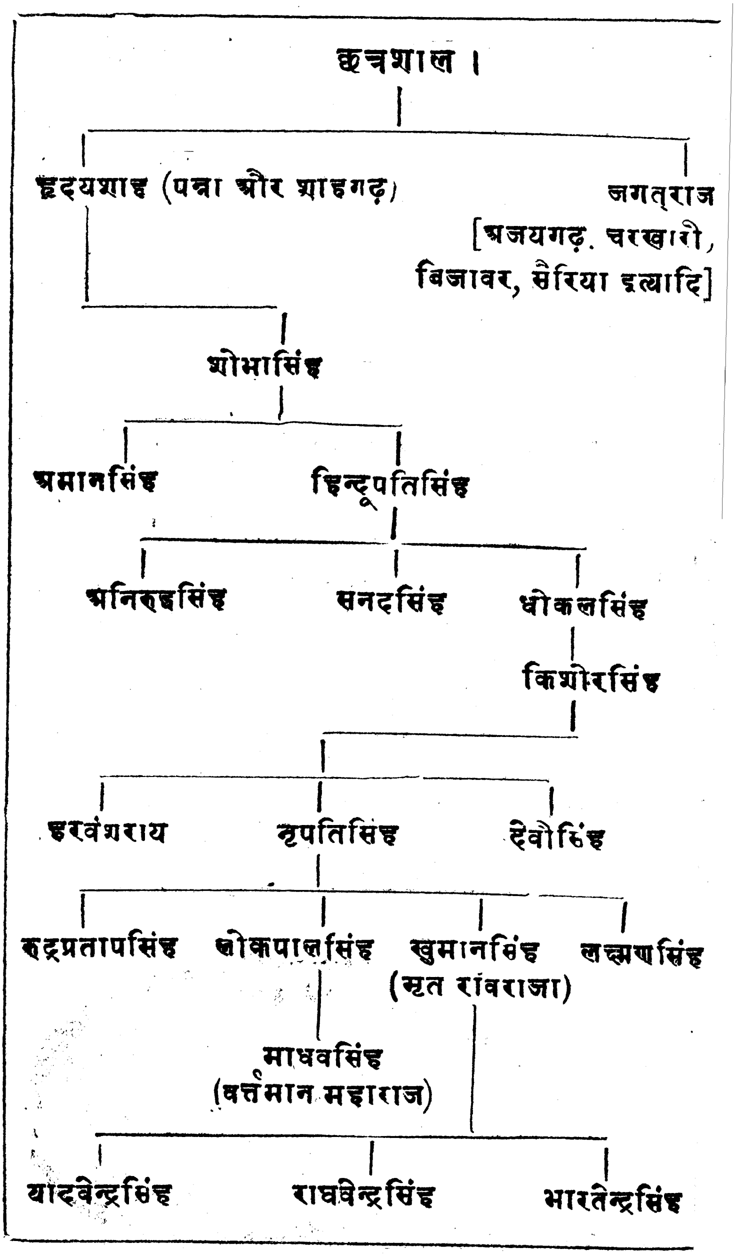

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समर्पण

मित्र !

अहो! तुम जानत हौ यह कथा सुहाई ।
जो द्यावापृथिवी लौं फैलि रही छबिछाई ॥
माता, पिता, मित्र ये तीनहिं सहज सुभावहिं ।
परम हितू, जगबीच, परै चौथो न दीख कहिं ॥
यह प्रवाद नहिं, सत्यकथा, भाषी महान जन ।
कारण? निर्विवाद याकौं अपनावत है मन ॥
यातें, सहितसनेह तुम्हें यह ग्रन्थ नवीनो ।
मित्र! तुम्हें निज मित्र जानि अरपन करि दीनो ॥
यदि समाजमहँ मित्र-उपायन सादर हियतें ।
ग्रहन करी जो जाति, तबै अपनावहु जियतें ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पन्नाराज्य का इतिहास।

प्रथम परिच्छेद।

राजवंश।

पन्नाका राजवंश बहुत प्राचीन है। इस वंशके आदि-पुरुष महाराज छत्रशालने राजपूत-कुलमें जन्म ग्रहण किया था। मध्यभारतान्तर्गत, सुरम्य विन्ध्याचल पर्वत-श्रेणीके बीच, पन्नाराज्य अवस्थित है। यह नगरी, चारों ओरसे पर्वतमालाओंसे इस प्रकार घिरी हुई है कि, शत्रुओं की गति रोकनेके लिये बहुत सामानकी आवश्यकता नहीं होती। ऊंचे ऊंचे पर्वतों और घने जङ्गलोंसे घिरी रहनेके कारण, यह नगरी चिरकालसेही ऐसी थी कि जिसमें शत्रु-का प्रवेश करना बहुतही कठिन कार्य्य था। महाराज छत्र-शालने बहुत थोड़े सामानसे राज्यरक्षा करनेके लियेही इस उपयुक्त स्थानमें अपनी राजधानी निर्माण की थी। पराक्रमी मुगल-सम्राट्के विरुद्ध वारवार युद्धयात्रा करके भी, उन्हें प्रायः कभी भी विशेष कष्ट सहन करना नहीं पड़ा था।

महाराज छत्रशालके पिता चम्पतराय, उर्छा (वर्त्तमान टीकमगढ़) के राजा वीरसिंहदेवके यहां एक सर्दार थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इससे पहले, बुन्देलखण्डके एक सामान्य जमीन्दार होने-पर भी, शाहजहांके बुन्देलखण्ड-आक्रमणके समयमें उन्होंने दो वार मुगल-सेनाको परास्त किया था। इसके पीछे, औरङ्गजेबने जिस समय दिल्लीका सिंहासन लेकर अपने भाइयों से झगड़ा करना आरम्भ किया था, उस समय चम्पतरायने उसकी सहायता करके "सर्दार" की उपाधि प्राप्त की थी। परन्तु थोड़ेही दिनोंमें बादशाहके चपल-व्यवहारसे चिढ़कर वे फिर मुगलोंके शत्रु बन गये थे। सम्भवत: सन् १६६४ ई०में उनका देहान्त हुआ था। उस समय उनके चौथे पुत्र छत्रशालकी अवस्था केवल चौदह वर्षकी थी। छत्रशाल, पिता की मृत्यु के पश्चात् अनन्योपाय होकर, युद्धविभागमें किसी कामकी खोज करने लगे। इसी समय, अम्बरपति प्रसिद्ध राजा जयसिंह, दाक्षिणमें युद्धयात्रा करनेका उद्योग कर रहे थे। छत्रशालने यह सम्वाद सुनकर अपने बड़े भाईके साथ जयसिंहके अधीन मुगलोंके युद्ध-विभागमें काम करना स्वीकार किया। कुछ दिनोंतक दक्षिणके सूब:दार बहादुरखांके अधीन काम करनेके पश्चात्, छत्रशालने मरहठोंके पराक्रम और महात्मा शिवाजीके गुणों की प्रशंसा सुनकर उन्हींकी मातहतीमें काम करना आरम्भ किया। महाराज शिवाजीने इस प्रतिभाशाली क्षत्रिय युवककी असाधारण बुद्धिमत्ता और युद्धकुशलतासे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रसन्न होकर, इसको एक स्वतन्त्र हिन्दूराज्य स्थापन करने-का उपदेश प्रदान किया। "छत्रप्रकाश" नामक पद्यइतिहास-ग्रन्थमें इस उपदेशका पूरा पूरा हाल मिल सकता है। शिवाजीका यह उपदेश पाकर छत्रशाल अपने देशमें आये, और अपने भुजबलसे उन्होंने यह पन्नाराज्य स्थापित किया।

सुनते हैं कि "प्राणनाथ" नामक एक योगीने यह राज्य स्थापन करनेमें छत्रशालको विशेष सहायता की थी। जिस समय दिल्लीके सिंहासनपर क्रूरचित्त औरङ्गजेबका अधिकार था; जिस समय उसके निष्ठुर आक्रमणसे भारतके हिन्दूराज्य और हिन्दूधर्मका विनाश होरहा था; उसी समय बुन्देलखण्डमें यह परमयोगी महापुरुष प्रगट हुए थे। एक दिन, जबकि छत्रशाल शिकार खेलते हुए एक पहाड़ी गुफाके मुँहपर पहुँचे थे, उसी समय योगीजीका उनका पहलेपहल साम्हना हुआ था। योगीजीने छत्रशालका हाथ पकड़कर कहा था—"बच्चा! मुसलमानोंके अत्याचारसे आज हिन्दूधर्मका विनाश होरहा है। तुम्हींको हिन्दूधर्म और हिन्दूराज्यकी रक्षा करनी होगी।"

छत्रशाल—"महाराज! मेरे पास धन नहीं है, साथी नहीं हैं; मैं एक सामान्य जमीन्दार होकर दिल्लीके बादशाहके विरुद्ध किस तरह खड़ा हो सकूंगा?"

योगी—(छत्रशालका हाथ पकड़ और उन्हें थोड़ी दूर आगे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ले जाकर) तुमको धनके लिये कभी चिन्तित न होना पड़ेगा। इस जगह और आसपासके जङ्गलोंमें असंख्य बहुमूल्य हीरे प्राप्त होंगे ।"

सचमुचही योगीजीकी कृपासे असंख्य बहुमूल्य हीरे प्राप्त हुए, और इन्हीं हीरोंने पन्नाराज्यको थोड़ेही दिनोंमें धन सम्पद्से परिपूर्ण कर दिया।

इन्हीं महापुरुषद्वारा प्रतिष्ठित "प्राणनाथ" नामक मन्दिरका दर्शन करनेके निमित्त आजभी दक्षिण, गुजरात, बम्बई, मदरास—यहांतक कि, सुदूर नेपाल और दार्जिलिङ्गसेभी, प्रतिवर्ष सहस्रों यात्री पन्नानगरीमें आते हैं। मध्यप्रदेशकी भक्तमण्डली बाबा प्राणनाथको भगवान्का अवतार समझकर उनकी पूजा करती है।

धन होनेपर साथियोंकी कमी नहीं रहती। छत्रशाल, इस प्रकार बहुत धन पाकर, सैन्यसंग्रह करने और धीरेधीरे अपने राज्यका विस्तार बढ़ाने लगे। थोड़ेही दिनोंमें उनका राज्य, उत्तर और यमुनासे लेकर दक्षिण दिशामें नर्मदाके तीरतक पहुँच गया। बुन्देलखण्डमें हिन्दूधर्मकी रक्षा और हिन्दूराज्यकी प्रतिष्ठा करके उन्होंने बड़ा यश प्राप्त किया। निज देश और धर्मकी रक्षाके लिये मुगलोंसे युद्ध करनेहीमें उन्होंने अपना समस्त जीवन व्यतीत किया।

सन् १७२८ ईसवीमें, जिस समय मुहम्मदशाह दिल्ली-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का बादशाह था, मुहम्मद खां नामक एक रुहिले सर्दारने हिन्दूराज्यके नष्ट करनेका उद्योग किया था। यह मुहम्मद खां पहले इलाहाबादका सूब:दार था। महाराज छत्रशालने अपने बीस हजार सैनिक लेकर बारबार इसके साथ युद्ध किया, परन्तु इसका आक्रमण वे रोक न सके। मुहम्मद-खांके साथियोंने बुन्देलखण्ड लूटना आरम्भ किया। छत्रशाल जब एक वर्षसेभी अधिक कालतक मुगलोंसे लड़कर जय-लाभ न कर सके, तब उन्होंने महाराज शाहूजीके प्रधान-मन्त्री बाजीराव पेशवासे सहायता मांगी। उस समय उन्होंने वीरेन्द्र बाजीरावको जो पत्र लिखा था, उसके अन्तमें यह दोहा लिखा हुआ था—

जो गति ग्राह-गजेन्द्रकी, सो गति ह्वैहै आज।
बाजी जात बुँदेलकी, बाजी ! राखो लाज॥

अर्थात् "पूर्वकालमें जिस प्रकार ग्राह (मगर) द्वारा पकड़े जाकर गजराज दुःखित हुए थे, आज हमलोगभी उसी प्रकार दुःखित हैं। बुंदेले बाजी हार रहे हैं; ऐसे समयमें, हे बाजीराव ! तुम उनकी लज्जा निवारण करो।" यह पत्र पढ़तेही बाजीरावका हृदय म्लेच्छोंके अत्याचारसे हिंदूराज्यकी रक्षाके लिये व्याकुल हो उठा। उन्होंने महाराष्ट्रपति शाहूजीसे आज्ञा लेकर, बारह सर्दार और बीस सहस्र सेनाके सहित मुहम्मदखांको जा घेरा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराज छत्रशालने इस प्रकार बाजीरावकी सहायता पाकर इस युद्धमें जयलाभ किया। मुहम्मदखांकी अधिकांश सेना नष्ट हुई; और ऐसा कहा जाता है कि, अपनी मांके कौशलसे मुहम्मदखां किसी प्रकार जीता जागता बुन्देल-खण्डसे भाग सका था।

इस युद्धके पश्चात् कई दिनतक बाजीराव पन्नाराज्यमें ठहरे रहे। इस विपद्से छुटकारा पानेके बदलेमें महाराज छत्रशालने बाजीरावको यमुनातीरवर्त्ती झाँसीका दुर्ग और दो लाखसे अधिक आयकी जमीन पुरस्कारस्वरूप दी थी। इसके सिवाय पन्नानरेशने "मस्तानी" नाम्नी एक सौन्दर्य्यमयी रमणी-रत्नभी देकर उनको सन्तुष्ट किया था। यह लड़की, छत्रशालकी किसी मुसलमानी उपपत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी। बाजीरावके रूपगुणपर कन्याके मोहित होजानेपर, अथवा उनको उपयुक्त पात्र देखकर, छत्रशालने उस कन्या-रत्नको बाजीरावके हाथमें समर्पण कर दिया था। "ता-रीख-बुंदेलखण्ड" नामक उर्दू इतिहासमें लिखा है कि, इच्छा न होनेपरभी जितेन्द्रिय बाजीरावने वृद्ध राजाका कहना मानकर मस्तानीको ग्रहण किया था। परन्तु कुछ दिन पीछे, वह उस रमणीके गुणोंपर ऐसे मोहित हुए थे कि उसके कारण राजकार्य्य चलानाभी कठिन हो पड़ा था। इसी मस्तानीके गर्भसे उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ था,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिसका नाम शमशेर-बहादुर रक्खा गया था । शमशेर-बहादुरके पुत्र अली-बहादुरने एक बार ४० सहस्र सेना संग्रह करके बुंदेलखण्डके परस्पर लड़नेवाले राजाओंको परास्त किया था, और १५ लाखकी आयकी जमीनपर अधिकार कर, पन्नाके पासही बान्दा नामक स्थानमें राजधानी स्थापित की थी। इन्होंके वंशधर आजभी "बान्दा-के नवाब" के नामसे प्रसिद्ध हैं। समयके हेरफेरसे, मस्तानीके वर्त्तमान वंशधर, इन्दौरके "राजकुमार कालेजमें" शिक्षा पाते और ३६ हजार रुपया वार्षिक वृत्ति लेकर पोलिटि-कल एजेण्ट (Political Agent) के अधीन रहते हैं।

सन् १७३३ ई०में महाराज छत्रशालकी मृत्युके स-मय बाजीराव फिर उनसे आकर मिले थे। उसी समय छत्रशालने, पहलेकी की हुई शर्तोंके अनुसार, अपने राज्य-का एक तृतीयांश उनको दिया था। सन् १८३८ ई० में मुहम्मद खाँने दूसरीबार बुन्देलखण्डपर आक्रमण किया। महाराज छत्रशालके दूसरे पुत्र जगत्राजने उसबारभी बाजीरावसे सहायता प्राप्त की थी। उस बारभी मुह-म्मदखाँकी अच्छी दुर्दशा हुई थी। कहा जाता है कि, उसने स्त्रीके वेशमें बाजीरावके सामने आकर प्राणभिक्षा मांगी थी, और बुन्देलखण्डको स्वाधीन हिन्दूराज्य स्वीकार करके छुट्टी पायी थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराज छत्रशालके दो लड़के थे। बड़े हृदेशासे पन्ना और शाहगढ़ राजवंश क्रमानुसार चलते रहे। सन् १८५७ ई०के सिपाही-विद्रोहके समय ब्रटिश गवर्णमेण्ट (British Government) के अधिकारमें पड़कर शाहगढ़राज्य आजकल ज़िला हम्मीरपुरके नामसे प्रसिद्ध है। छोटे जगत्‌राजसे अजयगढ़ चरखारी, विजावर, सरैया आदि छोटे छोटे वर्त्तमान राजवंशोंकी उत्पत्ति हुई है। महाराज छत्रशाल, मरनेसे पहले, अपने दोनों लड़कोंमें अपने राज्यका बराबर बराबर हिस्सा बाँट गये थे।

बड़े लड़के हृदेशाकी मृत्यु के पश्चात् उनके एकमात्र पुत्र शोभासिंहने पन्नाके सिंहासनपर आरोहण किया। शोभासिंहके दो लड़के थे। बड़े अमानसिंह थोड़ेही दिनोंतक राज्य करके बेचारे अपुत्रक अवस्थामें इस संसारसे चल बसे ; छोटे हिन्दूपतिसिंह सिंहासनके अधिकारी हुए। हिन्दूपतिसिंहके तीन लड़कोंमेंसे बड़े और मँझले, अनिरुद्धसिंह तथा सनदसिंहके कोई पुत्र नहीं था, अतएव सबसे छोटे धोकलसिंहने पन्नाकी गद्दी प्राप्त की।

महाराज धोकलसिंह आलसी और अक्षम नरपति थे। राज्यरक्षा और राज्यशासन करनेकी क्षमता उनमें नहींथी; इसी कारण, मन्त्रीके हाथमें राज्यभार सौंपकर, अन्तः-पुरमेंही अपना समय वे व्यतीत करते थे। इन्हींके समयमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अच्छा अवसर पाकर, जागीरदार और प्रधान प्रधान राज-कर्मचारी लोग विशेष क्षमताशाली होगये थे। उन लोगोंने आपसमें पन्नाराज्यके कई टुकड़े कर डाले थे, और छत्रपूर, मैहर, जोशो, कालिञ्जर आदि पन्नाके आसपासके छोटे छोटे वर्त्तमान राज्योंके अधीश्वर वे होगये थे। इससे पन्ना-राज्यकी प्रतिष्ठा घट गयी थी; जिसका फल यह हुआ था कि उन दिनों प्रजाकी बड़ी दुर्दशा होती थी। डाकू, लुटेरे इतने बढ़ गये थे कि राजधानीमें रहनेवाले लोग रात दिन उनके भयसे काँपा करते थे।

धोकलसिंहकी मृत्युके पश्चात् उनके नाबालिग़ पुत्र किशोरसिंहने सन् १७९३ ई० में पन्नाके सिंहासनपर आरोहण किया। इन्होंने प्रायः ४० वर्षतक राज्यशासन किया था। अङ्गरेज़ोंकी सहायता मिलनेके कारण इनको कभीभी शत्रुओंके अत्याचारसे दुःखित नहीं होना पड़ा था। सन् १८०७ ई० में, महाराज किशोरसिंहने ईष्टइण्डिया-कम्पनी (East India Company) से सन्धि करके सनद प्राप्त की थी। ब्रटिशराज्यके सहित पन्नाराज्यके वर्त्तमान सम्बन्धकी असल जड़ इस सनदके पढ़नेहीसे जानी जा सकती है।

महाराज किशोरसिंहके परलोकवासके पश्चात् उनके बड़े लड़के हरवंशरायने सन् १८३२ ई० में सिंहासनपर आरोहण किया। हरवंशराय, १६ वर्षतक विशेष बुद्धिमानी-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से राजशासन करके, प्रायः ८६ लाख रुपया राजकोष में छोड़ गये। हरवंशरायजीके कोई पुत्र नहीं था ; इस कारण उनके मरनेके पीछे उनके मँझले भाई नृपतिसिंहने सन् १८४८ ई०में पन्नाकी गद्दी प्राप्त की। इन्होंने, बाइस वर्षतक ब्रटिश-गवर्णमेण्टसे मेल रख और उत्तम रीतिसे प्रजापालन करके, विशेष बुद्धिमानीका परिचय दिया था। इनके मृत्युकालमें पन्नाका राजकोष परिपूर्ण था।

महाराज किशोरसिंहकेही समयमें प्रसिद्ध * सिपाही-विद्रोह हुआ था। उस समय विपद्में पड़ी हुई ब्रटिश-गवर्णमेण्टकी विशेष सहायता करके उन्होंने पुरस्कारमें खिलअत (Robe of Honour) प्राप्त की थी। इसके अतिरिक्त "महेन्द्र महाराज" उपाधिसे भी वे भूषित किये गये थे।

उस समय पन्ना-नगरी के पूर्व ओर, प्रायः २६ मीलके अन्तरपर, नागौद नामक स्थानमें बुन्देलखण्डकी पोलिटिकल एजेन्सी (Political Agency) थी। उस जगह, सिपाहियोंके एक दलके सिवाय, कुछ अङ्गरेजी सेना और पोलिटिकल एजेण्ट साहबकी छावनी थी। एक दिन महा-

* हमारी लिखी "सिपाही-विद्रोह, अर्थात् सन् १८५७ ई०के गदर का वृत्तान्त" नामकी पुस्तक देखिये। परन्तु अभी यह पुस्तक छपी नहीं है ; शीघ्र छप जायगी। मूल्य १०) रु० के लगभग होगा। (गङ्गाप्रसाद गुप्त)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राज नृपतिसिंहने सुना कि नागौदमें जितने सिपाही रहते थे, वे विद्रोही होगये, और अधिकांश अङ्गरेजी सेना काटकर, इस समय पासका गांव लूट रहे हैं। यह सम्वाद पातेही नृपतिसिंहने कुछ विश्वस्त सर्दारों और थोड़ी सेना साथ लेकर नागौदको ओर यात्रा की और बड़े कष्टसे पोलिटिकल एजेण्ट और उनके दो साथियोंको विद्रोही सिपाहियोंके हाथसे बचाया। इसके बाद वे उनको अपनी राजधानी पन्नामें ले आये। विद्रोहियोंसे डरे हुए तीनों अङ्गरेज छः मासतक उनके यहां छिपे रहे। विद्रोहाग्निके कुछ शान्त होनेपर, महाराज नृपतिसिंहने कुछ सर्दारोंके साथ उनको इलाहाबाद भेज दिया। गवर्णमेण्टने इस उपकारके निमित्त महाराज के आगे यथेष्ट कृतज्ञता प्रकाश की और खिलअत देनेके अतिरिक्त, जैसा कि ऊपर लिखा गया है, "महेन्द्र-महाराज"की उपाधिसे भी उनको भूषित किया।

महाराज नृपतिसिंहने जिस राजनीतिका अवलम्बन करके, अत्याचारी, लालची, विद्रोही, सिपाहियोंके हाथसे अपने राजकी रक्षा की थी, उसका साफ साफ विवरण हम संग्रह न कर सके। पन्नाके बड़े बूढ़े लोगोंके मुँहसे सुना है कि, प्रकाशमें तो वे अङ्गरेजोंके हितू थे, परन्तु असलमें विद्रोही सिपाहियोंसे मित्रता रखते थे। यहभी कहा जाता है कि, महाराज नृपतिसिंहने विद्रोहियोंके डरसे राजकोष

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का सब सुवर्ण इकट्ठा करके गलवा डाला था। पश्चात् उस सुवर्णसे हाथीके लिये एक बहुत भारी सिकड़ तय्यार कराया था और उसको काले रंगमें रंगवाके लोहेकी तरह बनाकर रख लिया था। कहते हैं कि महाराज नृपतिसिंहने यह विचार किया था कि, जब सिपाहियोंके हाथसे उनका निस्तार न होगा, तब उसी हाथीकी पीठपर चढ़कर वे भाग जायँगे! अस्तु।

महाराज नृपतिसिंहकी मृत्युसे एक वर्ष पूर्व, सन् १८६८ ई० में, बुन्देलखण्डमें भयङ्कर दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। उस समय कितने लोग भूखों मर गये, कितने देश छोड़कर भाग गये। नृपतिसिंहने, अकालसे पीड़ित प्रजाकी सहायताके लिये, एक बड़े उपकारका काम किया था। प्रतिदिन स्वयं उपस्थित रहकर वे दरिद्रोंको अन्न देते थे। दूर दूरसे महाराज नृपतिसिंहकी कीर्त्ति सुनकर दरिद्र लोग उनके पास आते थे, और किसीकोभी उनके निकट जाकर निराश होके लौटना नहीं पड़ता था। इस अन्नदानमें कई लाख रुपया खर्च करके, महाराजने गवर्णमेण्ट और प्रजा दोनोंमें बड़ी ख्याति लाभ की थी।

महाराज नृपतिसिंहका परिणाम बहुतही खराब हुआ था। मृत्युके कुछ समय पहलेसे वे मदिरा पीने लग गये थे और इसी कारण उनकी मृत्यु हुई थी। कहते हैं कि

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

एक दिन मदिराके धोखेमें महाराजने प्रूसिक् एसिड् * (Prussic Acid) पी लिया था; उसीसे उनका प्राणान्त हुआ। महाराज नृपतिसिंहकी मृत्युके पश्चात्, उनके ज्येष्ठ पुत्र रुद्रप्रतापसिंहने पन्नाके सिंहासनपर आरोहण किया।

महाराज रुद्रप्रतापने पन्ना-दरबारका मान बढ़ाया था। उनको बृटिश गवर्णमेण्टसे के॰सी॰एस॰आई॰की उपाधि मिली थी, और उन्होंने पन्नाराज्यके लिये तोपोंकी संख्या ग्यारहसे तेरह करा ली थी। इसके अतिरिक्त, "महेन्द्र-महाराज"की उपाधि भी, वंशपरम्परागतभावसे उनको मिली थी।

वर्त्तमान प्रधानमन्त्री (Chief Secretary) राव पृथिवी-पालसिंहने इसी समय पन्ना दरबारमें उच्च पद प्राप्त किया था। महाराज रुद्रप्रतापके और भी तीन भाई थे। मँझले भाई मृत लोकपालसिंह, हमारे वर्त्तमान महाराज माधव-सिंहके पिता थे। रुद्रप्रतापसिंहके तीसरे भाई खुमानसिंह-को "रावराजा"की उपाधि मिली थी। महाराज माधव-सिंह आज अङ्गरेज दरबारमें इन्हींके कारण अभियुक्त हैं; क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि, महाराजने इनको विष देनेके लिये अनेक ढङ्ग रचे थे। महाराज (रुद्रप्रतापसिंह)के सबसे छोटे भाईका नाम लक्ष्मणसिंह था। इन ४ भाइयोंमें-

* A Virulent poison (एक प्रकारका अतितीक्ष्ण विष)।

२ गु॰

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से इस समय कोईभी जीवित नहीं हैं। रावराजा खुमान-सिंहके तीन नाबालिग पुत्र वर्त्तमान हैं। महाराज रुद्रप्रतापने राजत्व आरम्भ करके कुछ दिनके लिये अपने तीनों भाइयोंसे मैत्री रखी थी। पश्चात्, सम्भवतः पृथिवीपालसिंह (मन्त्री) की सलाहसे, वे धीरे धीरे अपने भाइयोंसे विरोध करने लगे। खुमानसिंहने जागीर पानेके अभिप्रायसे नव-गाँव जाकर बुन्देलखण्डके पोलिटिकल एजेण्टसे बड़े भाई महाराज रुद्रप्रतापसिंहको शिकायत की। यद्यपि उस समय उनके कहनेका कुछ अच्छा फल नहीं हुआ, तौभी, पीछे बहुत कष्ट सहकर, उन्होंने आठ हजार रुपयेकी वार्षिक वृत्ति प्राप्त की। इधर रुद्रप्रताप और लोकपालसिंहमें भी झगड़ा आरम्भ हुआ। सुयोग देखकर, तवर्रुक़हुसैन नामक रुद्रप्रतापसिंहके एक मुसलमान कर्मचारीने, जश्नीत नामक लोकपालसिंहके एक प्रिय पात्रको कैदखानेमें बन्द करदिया। रुद्रप्रतापसिंहने इस विषयमें कुछ सोचविचार नहीं किया, वरन्, कार्य्य समाप्त होनेपर इस धूर्त्त मुसलमान कर्मचारीको "खाँ-बहादुर" की उपाधिसे भूषित किया। लोकपालसिंह अपने प्रिय पात्रकी ऐसी दुर्दशा देखकर दुःखित हुए, परन्तु रुद्रप्रतापके प्रभावसे वे उस समय कुछ कर न सके।

महाराज रुद्रप्रतापके राजत्वकालके अन्तिम भागमें, बुन्देलखण्ड प्रदेशमें डकैतोंका अत्याचार और उपद्रव बहुत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बढ़ गया था। इन डाकुओंके केवल ५।७ प्रधान दल थे; परन्तु ये सब रीतिके अनुसार दलके दल सज्जित होकर देश लूटने निकलते थे और काम पड़नेपर सम्मुख युद्ध करनेसे भी जी नहीं चुराते थे। बुन्देलखण्डके नरपति लोग, इनके अत्याचारोंसे इतने दुःखित होगये थे कि, उनको निरुपाय होकर अन्तमें अङ्गरेजी गवर्णमेण्टसे सहायता मांगनी पड़ी थी। इसी समय इण्डिया-गवर्णमेण्टने ठगी और डकैती विभागके तत्कालीन सुपरिण्टेण्डेण्ट प्रसिद्ध केप्टेन् हेङ्किन्स् साहबको इस अत्याचारके रोकनेके लिये पन्ना भेजा। इस बुद्धिमान् अङ्गरेज कर्मचारीके बुद्धि-कौशल और बड़े परिश्रमसे यद्यपि बुन्देलखण्डसे डकैतोंका अत्याचार कुछ कम हुआ, किन्तु एकबारही दूर नहीं होगया। इन लुटेरोंके सर्दार, प्रधानतः बुन्देलखण्डके राजाओंके ज्ञातिशत्रुके सिवाय दूसरा कोई नहीं था।

इस समय पन्नाका कैदखाना लुटेरे कैदियोंसे अच्छी तरह भर गया था। एक दिन जसोतने देखा कि कुछ लुटेरे एकत्र हो कैदखानेको चहारदीवारी तोड़कर भागनेका उद्योग कर रहे हैं। जसोतने और कई कैदियोंके सहित उन भागनेवाले लुटेरोंका पीछा किया, और सबको पकड़कर महाराज रुद्रप्रतापके पास यह हाल कहला भेजा। जसोतके इस सत्साहस और बुद्धिमानीसे सन्तुष्ट होकर,

महाराज रुद्रप्रतापने उनको तुरन्त कारामुक्त किया और बहुत कुछ पुरस्कार देकर बिदा किया। मृत्युके कुछ समय पहलेसे महाराज रुद्रप्रतापने राजकार्य्य देखना छोड़ दिया था। प्रिय दीवान बदरीनाथके हाथमें सब राजभार देकर, वे दिन रात अन्तःपुरमें रहा करते थे। इसी समय उन्होंने पन्नासे कुछ दूरपर "लक्ष्मीपुर-प्रासाद" नामक एक बड़ा विचित्र और मनोहर महल बनवाना आरम्भ किया था। यह महल थोड़ेही दिनोंमें अनेक देशोंकी बहुमूल्य वस्तुओंसे सजाया गया था और इसमें बिजलीकी रौशनी होती थी। परन्तु "लक्ष्मीपुर-प्रासाद" के सजधजकर तय्यार होतेही होते, महाराज रुद्रप्रतापसिंह परलोकको चले गये। महाराज रुद्रप्रतापने अपनी दानशीलता और धर्मनिष्ठताके लिये बड़ा यश प्राप्त किया था। दरिद्रों और ब्राह्मणोंकी सेवामें वे लाख लाख रुपया खर्च कर देते थे। विशेषतः, कोई भी भिक्षुक उनके पाससे खाली हाथ लौटकर नहीं जाता था। इसी अन्तिम गुणके कारण उनका नाम मध्य-भारतमें चिरस्मरणीय होगया है। महाराज रुद्रप्रतापके कोई लड़का नहीं था। उनकी मृत्युके पश्चात् उनके भाई लोकपालसिंहने पन्नाकी गद्दी प्राप्त की। उन्होंने गद्दी प्राप्त करतेही अपने प्रिय पात्र जब्बीतको जागीर देकर पुरस्कृत किया और अपना एडीकां बनाया। उस समय जब्बीत, मारे अभिमानके अत्याचारपरायण हो गये थे। उनके

अत्याचारकी मात्रा इतनी बढ़ गयी थी कि, लोकपालसिंह-की मृत्युके बादही, गवर्णमेण्टको उन्हें पन्नाराज्यसे निकालना पड़ा।

रुद्रप्रतापसिंहजीके समयसे पन्ना-दरबारमें मुसलमानोंका प्रभाव बढ़ने लगा था। कमिशनके विचारकालमें फ़िदाअलीका नाम बहुत लोग भली भांति जान गये हैं। यही फ़िदाअली, किसी समय सात रुपये महीनेका एक साधारण मुंशी था। पीछे, लोकपालसिंहके समयमें इसके पदकी उन्नति हुई थी और यह ३०) रुपये मासिक वेतन पाने लगा था। कहते हैं कि मृत रुद्रप्रतापसिंहके आगे लोकपालके प्रिय पात्र जञ्जीतको निर्दोष बतलानेका इसने विशेष प्रयत्न किया था, इसीसे इसकी पदोन्नति हुई। -

न जाने दीवान बदरीनाथके परामर्शसे, अथवा अपने प्रिय पात्र जञ्जीतके पहले कष्टका बदला लेनेकी इच्छासे, लोकपालसिंहने मृत भाई रुद्रप्रतापसिंहके कुञ्जहुजूरी नामक एक मित्रपर २० हजार रुपया जुर्माना किया। कुञ्जहुजूरीपर यह दोष लगाया गया कि, उन्होंने मृत रुद्रप्रतापसिंहकी प्यारी दुलारी नाम्नी किसी पर्दानशीन स्त्रीपर बुरी दृष्टि डाली है। इस प्रकार अकारण उत्पीड़ित होनेपर, कुञ्जहुजूरीने पोलिटिकल एजेण्टके पास जाकर लोकपालसिंहके विरुद्ध अभियोग उपस्थित किया। परन्तु इसका

उलटा फल हुआ; अर्थात्—एजेण्टके पाससे लौटकर पन्नामें पहुँचतेही वे कैद करलिये गये। इतनाही नहीं, किन्तु यह कहकर भी उनको भय दिखाया गया कि, सबके साम्हने उनपर बेंत पड़ेगी। कुचक्रियोंसे इस प्रकार पद पद पर दुःखित होकर, कुञ्जहुजूरीने अपने मनमें कहा कि, ऐसे जीनेसे मरजाना अच्छा है। यह सोचकर, एकदिन चुपचाप किसी पहरुएकी तलवार लेके उन्होंने अपने पेटमें घुसेड़ ली! इस तरह बेचारे कुञ्जहुजूरीका प्राण गया।

महाराज लोकपालसिंह, केवल चार वर्ष छः मासतक राज्य करके, इस लोकसे चले गये। इन्हीं थोड़े दिनोंके बीचमें राज्यमें दुर्भिक्ष फैला था। उस समय पन्नाकी प्रजामें बड़ा हाहाकार मच गया था और बहुतेरे लोग भूखों मर-गये थे। लोकपालसिंह किसी प्रकार यह दुर्भिक्ष न रोक सके थे। इस कारण, गवर्णमेण्टसे तिरस्कृत होकर, उन्होंने पन्नाके पासही एक बहुत बड़ा तालाब खुदवाना आरम्भ किया था। परन्तु इसके तय्यार होनेसे पहलेही उनका पर-लोकवास होगया। इस तालाबका नाम उन्होंने "लोकपाल-सागर" रक्खा था। उनकी मृत्युके पश्चात् उनके पुत्र माधव-सिंहने इस काममें हाथ नहीं डाला; यही कारण है कि यह तालाब आजतक असंपूर्ण अवस्थाहीमें पड़ा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दूसरा परिच्छेद ।

महाराज माधवसिंह ।

महाराज लोकपालसिंहकी मृत्युके उपरान्त, उनके एक-मात्र पुत्र माधवसिंहने, सन् १८९८ ई०के मार्च मासमें पन्ना-की गद्दी प्राप्त की। उसी वर्ष, जून महीने में, अभिषेकोत्सव भी बड़े समारोहसे समाप्त हुआ। उनके पन्नाकी गद्दी प्राप्त करनेके तीन वर्षसे कुछ अधिक कालके पश्चात्, विष खिलाये जानेके कारण, उनके चचा रावराजा खुमानसिंहकी मृत्यु हुई। कहते हैं कि इस काम अर्थात् विष खिलानेमें, महा-राज माधवसिंह शामिल थे, इसी सन्देह पर आज वे राज्य-च्युत और अङ्गरेज-दरबारसे दण्डित हैं। यद्यपि महा-राज माधवसिंहका राजत्वकाल थोड़ा है, तथापि उसमें बहुतसी ऐसी बातें हुई हैं जिनका जानना हमारे पाठकोंके लिये आवश्यक है; अतएव इस स्थानपर उनका पूरा पूरा हाल हम लिखते हैं।

महाराज माधवसिंहको मिष्ठभाषी, भद्र और दया-वान् कहकर सबलोग उनकी प्रशंसा करते हैं। यह बात सत्य है कि उन्होंने कभी भी किसीके साथ कर्कश भा-षामें बातचीत नहीं की। गुरुजनोंपर भक्ति रखके, और कर्मचारियोंके साथ सर्वदा अच्छा बर्त्ताव करके, वे थोड़ेही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिनों में प्रजाके विशेष प्रिय बन गये थे। परन्तु अनेक अच्छे अच्छे गुणों के होतेभी, उनमें दो भारी दोष—(१) अदूरदर्शिता और (२) मुसलमानोंपर विशेष प्रीति,-थे; जिनके कारण पन्ना-दरबारके अधिकांश लोग इस समय उनसे चिढ़े हुए हैं। अवश्यही यह "मुसलमान-पक्षपात" महाराज माधवसिंहके बाल्य संस्कार और बाल्यावस्थाकी शिक्षाहीका फल था। उनके पिता महाराज लोकपालसिंहने, उनको उर्दूभाषा सिखानेके निमित्त फिदाअली नामक एक मुसलमान शिक्षकको नियुक्त किया था। प्रथम परिच्छेदमें इस फिदाअलीका कुछ हाल लिखा गया है। यह धूर्त्त मुसलमान कर्मचारी, गवर्णमेण्टकी आज्ञासे पन्नासे निकाला जाकर, इस समय इलाहाबादमें रहता है। लोकपालसिंह, बड़े भाई महाराज रुद्रप्रतापसिंहसे विरोध रखनेके कारण, पुत्र माधवसिंहकी उत्तम शिक्षाका कोई प्रबन्ध न कर सके। बालक माधवसिंह, कुछ कालतक पन्नाके हाई स्कूल (High School) में शिक्षा प्राप्त करनेके पश्चात्, फिदाअलीकी बुरी सलाहमें फँस गये, और उसी समयसे अच्छी शिक्षा पानेका उन्होंने कोई उद्योग नहीं किया। पन्नाके सिंहासनपर आरोहण करनेके साथही उन्होंने अपने मित्रोंको जागीरदानसे पुरस्कृत और बड़ी बड़ी उपाधियोंसे भूषित करना आरम्भ किया। इसी समय फिदाअलीने सेक्रेटरी (मन्त्री)का पद प्राप्त किया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रावराजा खुमानसिंहसे उनके भाइयोंसे बनती नहीं थी, अर्थात् उनमें परस्पर मित्रता नहीं थी। राज्यके प्रधान मन्त्री पृथिवीपालसिंह सर्वदा यही चेष्टा किया करतेथे कि किसी प्रकार यह विवादाग्नि बुझने न पावे। परन्तु महाराज माधवसिंहने, अपने प्रिय पात्र फिदाअलीके परामर्शके अनुसार, चचा दीवान खुमानसिंहको "रावराजा"-की उपाधि और वार्षिक चार सहस्र रुपये आयकी जमीन दी। इसके सिवाय, पहले जो आठ सहस्र मुद्रा वार्षिक देते थे, उसका देनाभी बन्द नहीं किया। कदाचित् उसी समय खुमानसिंहजीने अपने पुत्रका हाथ पकड़कर प्रतिज्ञा की थी कि, जबतक वे जीवित रहेंगे तबतक कभी भी पन्नाराज्य अथवा महाराज माधवसिंहकी बुराई न सोचेंगे।

मिष्टर स्यान्ली नामक एक अङ्गरेज महाशय बहुत दिनोंसे पन्नाकी सरकारमें काम करते आते हैं। गवर्णमेण्टने, पन्नाराज्यपर अधिकार करने के पश्चात्से, इन्हीं स्यान्ली साहबके हाथमें एक तरहपर राज्यका पूरा पूरा प्रबन्ध दे रखा है। महाराज माधवसिंहने पहले पहल स्यान्ली साहबके हाथमेंही तहसीलोंका सम्पूर्ण भार देना चाहा था; परन्तु पीछे, फिदाअली और तवर्रुकहुसैनकी सलाहसे, उन्होंने यह इच्छा बदल दी थी, और फिदाअली तथा तवर्रुकहुसैनही राज्यके सर्वमय कर्त्ता बनाये गये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस समय (१८९९में) मुसलमान कर्मचारियोंको अपना प्रभाव बढ़ानेका अच्छा अवसर मिल गया था। बुंदेलखण्डके उस समयके पोलिटिकल एजेण्ट, केप्टेन् कालविनने, पन्नाकी पुलिस सेनाके बढ़ाने और जड़से उसका संस्कार करनेके लिये पत्र लिखकर पन्नादरबारसे अनुरोध किया। यह पत्र पाकर, मैजिष्ट्रेट् तवर्रुकहुसैन और फिदाअलीके हाथमें संस्कारका भार सौंपके, महाराज माधवसिंह निश्चिन्त होगये। इसका यह फल हुआ कि दलके दल मुसलमान आकर नौकरीकी प्रार्थना करने लगे, और फिदाअली तथा तवर्रुकहुसैनने, दोषगुणपर विचार न करके, उन सबोंको अनेक कार्योंमें नियुक्त करना आरम्भ किया। इस प्रकार, राजदरबारमें मुसलमान कर्मचारियोंको गिनती बहुत बढ़ गयी और बड़े अत्याचार होने लगे। इसके पश्चात्, दरबारमें दो दलोंकी सृष्टि हुई। प्रधान मन्त्री-राव पृथिवीपालसिंह, मन्त्री-राव अनन्तसिंह, नायबदीवान—बाबू लालबहादुर, बदरीनाथ और मिष्टर स्यान्‌ली,—हिन्दूदलके नेता हुए। दूसरी ओर, मुसलमानोंके सर्दार हुए—फिदाअली, तवर्रुकहुसैन, महाराजके हिन्दी पेशकार अच्छेलाल, अमातुल्ला और इक्रामुल्ला। कहा जाता है कि, राज्यडाक्टर ओनाथघोष भी, इसी दूसरे दल अर्थात् मुसलमानोंसे मिले हुए थे। राज्यके कर्मचारियोंमें इस प्रकार अनबनत हो-

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

नेके कारण, कोईभी राज्यके हितकी बातें नहीं सोचता था। आपसकी बुराई सोचनेमेंही सबलोग अपना अपना समय व्यतीत करते थे। महाराज माधवसिंहने सब बातें जानकर भी, इनके रोकनेका कोई यत्न नहीं किया। इसी समयसे उनका अधःपतन आरम्भ हुआ।

सन् १९०० ई०के प्रारम्भमें, गवर्णमेण्टके परराष्ट्रविभाग (Foreign Department) में, पन्नाके घूसवाले मुकद्दमे-पर बड़ी हलचल मच गयी थी। इस घूसके मुकद्दमेके समाप्त होनेके बादहीसे, भारतगवर्णमेण्टने पन्नापर कड़ी दृष्टि डाली थी। बहुत लोग समझते हैं कि, इस विषप्रयो-गके मुकद्दमेसे घूसके मुकद्दमे का विशेष सम्बन्ध है। दूसरी घटना, पहली घटनाका उपसंहार मात्र है। वह चाहे जो हो, हम पहले इसी घूसके अभियोगका हाल संक्षेपमें लिखते हैं।

हरनामसिंह नामक एक आदमी, २५) रु० वेतनपर गवर्णमेण्टके आबकारी विभागमें, झांसीमें जासूसका काम करता था। भारतगवर्णमेण्टके परराष्ट्र-विभागके किसी ऊंचे दर्जेके कर्मचारीके साथ इस हरनामसिंहकी कदा-चित् कोई रिश्तेदारी थी। रही हो या न हो, पर वह सब लोगोंसे यही कहकर अपना परिचय दिया करता था। जब वह झांसीमें था, उस समय पन्नाके मजिष्ट्रेट् तवक्क-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुसैनसे उससे बातें हुईं। सुनते हैं, तवर्रुकहुसैनने महाराज माधवसिंहकी एक उपाधिके लिये चेष्टा करनेका उस समय हरनामसिंहसे अनुरोध किया था। हरनामसिंह भी इस विषयमें सहायता करनेको तय्यार होगया था। इसके बाद यह निश्चय हुआ कि भारतगवर्णमेण्टके परराष्ट्र विभागके कुछ कर्मचारियोंको घूस देकर यह उपाधि संग्रह की जाय। हरनामसिंहने अपने उसी सम्बन्धीकी सहायतासे यह काम पूरा करनेका भार अपने ऊपर उठा लिया। कई हजार नक़द रुपये भी उसने तवर्रुकहुसैनसे पेशगी ले लिये। उसी समयमें हरनामसिंहके नाम लिखे हुए तवर्रुकहुसैनके दो पत्र, लाहोरमें पकड़े जाकर गवर्णमेण्टके हाथमें पहुँचाये गये। इन्हीं दो पत्रोंमें लिखी हुई बातोंपर भरोसा करके तवर्रुकहुसैनका विचार आरम्भ हुआ। अन्तमें, हरनामसिंहको दो वर्षका सपरिश्रम कारादण्ड और २००) रु० जुर्माना हुआ। तवर्रुकहुसैनको राज्यसे निकालने और फ़िदाअलीको पन्नादरबार से अलग कर देनेको गवर्णमेण्टसे महाराजको आज्ञा मिली। यद्यपि यह बात प्रमाणित नहीं हुई कि महाराज माधवसिंह इस घूसके मामलेमें शामिल थे, तथापि मुकद्दमेकी समाप्तिपर, भारतगवर्णमेण्टसे उनको एक तिरस्कारपूर्ण पत्र मिला। उस पत्रके एक अंशमें यह बात लिखी थी,—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"By the misconduct of your servants you have placed yourself in a position which has exposed you to the danger of a painful suspicion on the part of the Government of India."

इसी कारण, जिस समय बड़े लाटके मध्यभारतके एजेण्ट पन्ना देखने गये थे, उस समय वे महाराज माधवसिंहसे नहीं मिले थे। इसके सिवाय, उन्होंने कहला भेजा था कि उनके आनेपर पन्नामें किसी प्रकारका आमोद प्रमोद अथवा धूमधाम न की जाय। कमिशनके कागजपत्रोंमें यह मुकद्दमा Harnam Sing's Case या The Bribery Case के नामसे लिखा है।

ऊपर लिखी दुर्घटनाके सिवाय, महाराज माधवसिंहकी असावधानता और उनके मुसलमान मित्रोंकी बदमाशीसे, दो निर्लोभ आदमियोंकोभी कष्ट उठाना पड़ा। फिदाअली और तवर्रुकहुसेनके कारण, बाबू लालबहादुर नामक एक पुराने और उच्चपदस्थ कर्मचारीको, पन्नाके मजिष्ट्रेटके पदसे पृथक् होना पड़ा। बाबू लालबहादुरके अलग किये जानेपर, पन्नाके बड़े, छोटे, स्त्री, पुरुष, सभी लोगोंने दुःख और विरक्ति प्रकाश की थी। इसके उपरान्त, रावराजा खुमानसिंहके एक कर्मचारी, और कृष्ण तथा जयकिशोर नामक बलदेवजीके मन्दिरके दो पुरोहित, सबके साम्हने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बेंतसे पीटे गये। महाराजकी मांको एक ऐसा गुमनाम पत्र मिला, जिसमें महाराजके चरित्रपर बहुत दोष लगाये गये थे। उस पत्रका असल लेखक कौन था, इसके विषयमें कुछ विशेष पता न लगा; किन्तु ऐसा सन्देह होता है कि, फिदाअली और तवर्रुकहुसेनने महाराजहीकी आज्ञासे ऊपरलिखे तीनों आदमियोंको दण्ड दिलवाया था। जोहो, इस बातसे रावराजा खुमानसिंह मनमें बहुत दुःखित हुए, परन्तु सबके साम्हने उन्होंने वह दुःख प्रकाश करनेका साहस नहीं किया।

महाराज माधवसिंह, रानी कमलकुमारीके साथ दो बार यात्रा करने निकले थे। सन् १८९८ ई०के जनवरी मासमें वे उनको साथ लेकर लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस, कलकत्ता आदि शहर देखने गये थे। जब वे कलकत्तेमें थे, उस समय उन्होंने किसीको अपना परिचय नहीं दिया था; यहांतक कि, उस समय गवर्णमेण्टको भी यह बात नहीं मालूम हुई कि महाराज यहां आये हैं। उसी साल, सितम्बरके महीनेमें, वे देशभ्रमण करने फिर निकले। इसबार आगरा, दिल्ली, लाहौर, अमृतसर, रावलपिण्डी, पेशावर और लखनऊ देखकर, वे अपनी राजधानीको लौटे थे। रानी कमलकुमारी इसबारभी उनके साथ थीं। राजधानीमें आने के कुछ दिनोंके बाद, बीबी हैदरजान, "रानी क-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मलकुमारी" के नामसे पुकारी जाने और पर्देके अन्दर रहने लगीं।

महाराज माधवसिंहने सिंहासन प्राप्त करनेके साथही, एक विचित्र इमारत बनवानी आरम्भ की थी। इस इमारतका नाम उन्होंने "महेन्द्र-भवन" रखा था, और देशदेशान्तरोंसे बहुमूल्य वस्तुएँ मँगाकर इसे सजाया था। "महेन्द्र भवन" सचमुचही दूसरी इन्द्रपुरी है। इस इमारतकी बनावट देखकर चकित होना पड़ता है। "महेन्द्र भवन" का एक विशेष अंश "रङ्गमहल" के नामसे प्रसिद्ध है। "रङ्गमहल" रानी कमलकुमारीहीके लिये बनवाया गया था। इस "रङ्गमहल" में प्रवेश करनेसे जाना जाता है कि, विलासिता अथवा ऐशपसन्दीकी जितनी चीजें संसारमें मिल सकती हैं, वे सब यहां वर्त्तमान हैं। परन्तु दुःखका विषय यह है कि महाराज माधवसिंह वर्षभर भी इस महलमें न रहने पाये थे कि, चिरकालके निमित्त वे पन्ना राज्यसे अलग कर दिये गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तीसरा परिच्छेद ।

रावराजा खुमानसिंह ।

महाराज नृपतिसिंह, सन् १८४८ ई०में पन्नाके सिंहासनपर बैठे थे। उस समय उनके रुद्रप्रताप और लोकपाल नामक दो पुत्र थे। तीन वर्षतक राज्यशासन करनेके पश्चात्, सन् १८५१ ई०में, उनके तृतीय पुत्र खुमानसिंह पैदा हुए। अपने बालकों को उत्तम विद्याशिक्षा देनेके लिये महाराज नृपतिसिंह विशेष यत्न करते थे। पेसिना नामक एक फ़िरङ्गीके हाथमें उन्होंने अपने पुत्रोंकी शिक्षाका भार सौंपा था। तीसरे पुत्र खुमानसिंहने, कुछ कालतक अङ्गरेजी पढ़कर संस्कृतकी चर्चा आरम्भ की, और आजीवन आग्रहके साथ देवभाषाहीका अभ्यास किया। वे प्रधानतः पातञ्जल योग, सांख्य, वेदान्त, भागवत और शुक्रनीति आदिके देखनेमें अपना समय व्यतीत करते और किसी विख्यात पण्डितके पन्नामें आनेपर उसके साथ शास्त्रचर्चा करके तृप्ति लाभ करते थे।

सन् १८७० ई०में नृपतिसिंहकी मृत्यु हुई; उनके ज्येष्ठ पुत्र रुद्रप्रतापसिंहने सिंहासनपर आरोहण किया। सिंहासनपर बैठनेके साथही, उन्होंने अपने मँझले भाई लोकपालसिंहको सदर मुहकमे (High Court) का कर्त्ता बना दिया, और तीसरे भाई खुमानसिंहको सेनापतिके पदपर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नियुक्त किया । खुमानसिंहने सैनिकोंको अच्छी रीतिसे युद्धनीतिकी शिक्षा दी थी । वे प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर छावनीको जाते और सैनिकोंको व्यूहाभ्यास कराते थे । इसके सिवाय, सप्ताहमें एक दिन "चांदमारी" भी होती थी । इन्हींके समय पन्नाका तोपखाना सुसज्जित और सुदृढ़ हुआ था । खुमानसिंह इस परिश्रमके लिये राजकोषसे नियमित मासिक वृत्ति पाते थे । इसी प्रकार बारह वर्षतक वे यही काम करते रहे ।

महाराज नृपतिसिंह राजनीति-विशारद और बुद्धिमान् थे । उन्होंने अपने छोटे लड़के लक्ष्मणसिंहको बुन्देलखण्डके अन्तर्गत जिगनी नामक राज्यका राजा बना दिया था । मँझले पुत्र लोकपालसिंहको सागरके पास शाहगढ़ राज्यका राजा बनानेकी चेष्टा कर रहे थे कि इतनेमें, सन् १८५७ के सालमें, सिपाही-विद्रोह प्रारम्भ हो गया । बलवेके समय, अङ्गरेजोंके विरुद्ध चाल चलनेके कारण शाहगढ़के राजा, वृटिश-राज्यसे दण्डित हुए थे । इसी कारण, नृपतिसिंह अपने मध्यम पुत्रको शाहगढ़के अधिपतिका दत्तकपुत्र न बना सके । परन्तु पीछे, लोकपालसिंहको पन्नाराज्यसेही रायपुर पर्गना नामक २५ हजार रुपये वार्षिक आयकी जमीन दे गये । नृपतिसिंहने अपने तीसरे पुत्र खुमानसिंहको बुन्देलखण्डके अन्तर्गत सँडौला नामक

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

राज्यका राजा बनानेकी चेष्टा की थी; परन्तु उनकी यह इच्छा पूरी न हुई। अकस्मात् मृत्यु होजानेके कारण, खुमानसिंहको वे कोई जागीर न दे जा सके।

पिताकी मृत्युके पश्चात्, बड़े भाई रुद्रप्रतापने पन्ना-राज्य पाकर कई वर्षतक अपने भाइयोंसे मित्रता रखी। सिंहासन पानेके तीन वर्ष बाद, उन्होंने बड़ी धूमधामसे अपने तीसरे भाई खुमानसिंहका विवाह किया। परन्तु बुरी सलाह देनेवाले लोगोंके परामर्श-जालमें पड़कर, धीरे धीरे उन्होंने अपने भाइयोंसे विरोध करना आरम्भ किया। सन् १८८२ई०में. खुमानसिंहने बड़े भाई महाराज रुद्रप्रताप-सिंहसे जागीरके लिये प्रार्थना की। कुचक्रियोंकी सलाहसे रुद्रप्रतापने खुमानसिंहकी प्रार्थना स्वीकार न करके, उन्हें राज्यसे अलग कर दिया। खुमानसिंहने निरुपाय होकर निकटवर्त्ती टीकमगढ़ नामक राज्यमें आश्रय लिया और वहांके राजासे एक जागीरभी प्राप्त की। इस प्रकार टीकमगढ़ राज्यसे सहायता पाकर, खुमानसिंने जागीर पानेकी लालसासे बुन्देलखण्डके पोलिटिकल एजेण्टके पास महाराज रुद्रप्रतापसिंहके विरुद्ध मुकद्दमा खड़ा किया। जिस रुद्रप्रतापने कई वर्ष पहले स्वयं उपस्थित रहकर बड़े समारोहसे तीसरे भाई खुमानसिंहका विवाह कराया था, वही इस बार उनको दासीपुत्र प्रमाणित करनेका प्रयत्न

करने लगे। सौभाग्यसे, जयपुरके रेजिडेण्ट डा: ष्ट्रेटेनरके हाथमें गवर्णमेण्टने इस झगड़ेकी जाँचका भार अर्पण किया। ष्ट्रेटेनर साहब इससे पहले बीस वर्षतक बुन्देलखण्डके पोलिटिकल एजेण्ट रह चुके थे, और खुमानसिंहको अच्छी तरह जानते थे। इस कारण, रुद्रप्रताप खुमानसिंहको दासीपुत्र कहकर जीत न सके। इसके दो वर्ष बाद, खुमानसिंह इन्दौर, जयपुर आदि अनेक स्थानोंमें घूमे; परन्तु कहीं भी उनका मतलब सिद्ध न हुआ; तब लाचार होकर वे पन्ना लौट आये और महाराज रुद्रप्रतापसिंहसे केवल आठ सहस्र रुपये वार्षिक वृत्ति लेकर रहने लगे।

खुमानसिंह, रुद्रप्रतापसिंहके आज्ञानुसार, पन्नानगरीके पास रानीबाग नामक स्थानमें रहने लगे। किन्तु उस समयसे फिर कभी वे राज्य-सम्बन्धी कामोंमें हस्तक्षेप न कर सके। इसके सिवाय, अजयगढ़के राजासे एक और जागीर पाकर वे संसार-यात्रा निर्वाह करने लगे। सन् १८६१ ई०में, अपने छोटे भाई लक्ष्मणसिंहको अपुत्रक अवस्थामें मृत्यु होजानेपर, खुमानसिंहने "जिगनी" राज्य पानेके लिये विशेष यत्न किये थे; परन्तु बड़े भाई रुद्रप्रतापसिंहसे सहायता न मिलनेके कारण, वे इस काममें कृतकार्य्य न हो सके। इसके लिये उन्होंने शिमले जाकर भारत-गवर्णमेण्टके पर-राष्ट्र-विभाग (Foreign Deptt.) के सेक्रेटरीसे भी साक्षात् किया था; परन्तु उनके वहां जानेका कोई फल नहीं हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खुमानसिंहकी पहली स्त्रीके गर्भसे एक कन्याको छोड़, जितने लड़केवाले उत्पन्न हुए थे, वे सब मर गये थे। दूसरी बार विवाह करनेकी आवश्यकता देखकर, सन् १८९२ ई० के फेब्रुअरी मासमें, पहली स्त्रीकी छोटी बहिनके साथ उन्होंने फिर अपनी शादी की। इस नयी स्त्रीके गर्भसे उनके तीन पुत्र उत्पन्न हुए। वे तीनों इस समय भी वर्तमान हैं। उनकी मृत्युके दो तीन महीने बाद, उनके एक लड़की भी हुई थी।

सन् १८९३ ई०के अक्तूबर मासमें महाराज रुद्रप्रतापसिंह, निःसन्तान अवस्थामें सन्यास रोगसे हठात् इस संसारसे चल बसे। रुद्रप्रतापकी मृत्युके तीन महीने पीछे, खुमानसिंहके बड़े लड़के यादवेन्द्रसिंहका जन्म हुआ। मँझले भाई लोकपालने सिंहासनपर बैठकर अपने साथियोंके परामर्शानुसार खुमानसिंहसे मित्रभाव नहीं रखा। अतः खुमानसिंहको राजकार्यमें हस्तक्षेप करनेका अवसर नहीं मिला। किन्तु महाराज लोकपालकी मृत्यु के पश्चात्, उनके एकमात्र पुत्र वर्त्तमान महाराज माधवसिंहने, सिंहासनपर बैठनेके साथही, चचा खुमानसिंहको "रावराजा"की उपाधि दी, और ४ हजार रुपये वार्षिक आयकी जागीर देकर उनसे मित्रता स्थापित की। परन्तु पीछे माधवसिंहने भी, मुसलमान-मन्त्रियोंकी बुरी सलाहमें पड़कर, रावराजाको किसी राजकार्यमें हाथ न डालने दिया। रावराजा,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराजके बड़े आज्ञाकारी थे। किसी बड़े जागीरदारसे मिलनेकी आवश्यकता होनेपर, प्रायः महाराजके बदले रावराजाही जाया करते थे। इसके सिवाय, महाराजके साथ सर्वदा वे अनेक विषयकी बातें किया करते थे।

रावराजा नये नये देशोंमें घूमना बहुत पसन्द करते थे। एकबार वे सपरिवार प्रयागमें गङ्गास्नान करने गये थे। इसके सिवाय, कलकत्ता, मन्द्राज, बम्बई, लाहौर, शिमला आदि अनेक स्थानोंमें घूमकर, उन्होंने अभिज्ञता लाभ की थी।

खुमानसिंह युवावस्थामें थोड़ी थोड़ी मदिरा पीते थे। परन्तु पीछे, डाक्टर श्रीनाथघोषके परामर्शसे, उन्होंने उसे ज़हर समझकर छोड़ दिया। खुमानसिंह बड़ेही सहनशील पुरुष थे। दस कोस तक पैदल चलकरभी वे थकते नहीं थे। बीच बीचमें वे जङ्गली सूअर, मृग, व्याघ्र आदिका शिकार करते थे, परन्तु शिकार खेलना वे जीसे पसन्द न करते थे। खुमानसिंह तेजस्वी, धार्म्मिक, विद्वान्, शास्त्रानुशीलन-प्रिय और स्वाधीन प्रकृतिके मनुष्य थे। सब कामोंमें उनके साहसी होनेका परिचय मिलता था; इसीसे राज्यके सब लोग उनसे भय करते तथा उनपर भक्ति रखते थे। वे आमोद प्रमोदसे इतना भागते थे कि कभीभी नाचगाना सुनने या देखने न जाते थे।

चौथा परिच्छेद ।

रानी कमलकुमारी ।

हमारे पाठकोंमेंसे बहुतोंको रानी कमलकुमारीका नाम आजतक याद होगा । दुर्भिक्ष-पीड़िता, राजपथमें पड़ी हुई एक गरीबनी बालिका किस प्रकार अतुल ऐश्वर्य्य-के अधिकारी, श्रीमान् पन्नानरेशकी हृदयेश्वरी रानी हो गयी थी, यह बात बहुत लोग जानते होंगे । इस परिच्छेद-में हम संक्षेपमें यह दिखलावेंगे कि, भाग्यचक्रके घूमनेसे मनुष्यकी अवस्था कहांतक बदल सकती है । पाठक देखेंगे कि, एकदिन जिस बालिकाके माता पिताने, दरिद्रताके कारण, भोजन देनेसे असमर्थ होकर, खुल्लमखुल्ला किसी वेश्याके हाथ उसे बेच डाला था, वही बालिका, समयके हेरफेरसे, राजराजेश्वरी कैसे हो गयी थी ।

रानी कमलकुमारीके जन्मवृत्तान्तके सम्बन्धमें दो प्रकार की बातें प्रसिद्ध हैं । यह बात हम स्थिर न कर सके कि, इन दोनोंमेंसे कौन कहांतक सत्य है; अतएव दोनो ही बातें संक्षेपमें लिखे देते हैं । डाक्टर श्रीनाथघोषके मुख-से जो बात सुननेमें आयी है, पहले उसीको लिखते हैं ।

पन्नासे ७ कोस पूर्व ओर, "प्यरेरिराटोला" नामक स्थानमें, सरकारी डाकबँगला है । सतनासे पन्नाको ओर जो चौड़ी सड़क गयी है, उसीके किनारे यह बँगला पथिकों-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के विश्रामार्थ बना है। १७-१८ वर्ष हुए, इमामी नामक एक मुसलमान सिपाही इस बँगलेकी रक्षाके लिये नियुक्त था। इमामी, पासके किसी गाँवकी रहनेवाली "मखुरिया" नाम्नी एक विधवाके रूपपर मोहित होकर, उसे उसके घरसे निकाल लाया। कुछ दिनोंके बाद, मखुरियाके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई। इस कन्याके जन्म लेतेही, मखुरिया अन्धी होगयी। मखुरियाके अन्धी होजानेपर, स्वार्थी इमामीने अपने घरसे उसे निकाल दिया। कुछ दिनोंतक पथिकों और डाक-बँगलेमें टिकनेवाले यात्रियोंसे भीख मांगकर, मखुरियाने किसी प्रकार उस कन्याको अपने पास रखा; परन्तु पीछे, दुर्भिक्षसे पीड़ित होके, उस पांच वर्षकी कन्याकी उँगली पकड़कर वह पटनामें चली आयी। यहां पहुँचकर उसने उसे २॥) रु० पर उमरावजान नाम्नी किसी वेश्याके हाथ बेच डाला।

रानी कमलकुमारीके जन्मवृत्तान्तके विषयमें महाराजकी ओरसे जो बात सुननेमें आयी है, वह यह है कि,— "कमलकुमारी" तुलसिया और अमानसिंह नामक, विशुद्ध ठाकुरवंशीय, किसी दरिद्र दम्पतीकी बालिका थी। दुर्भिक्षके समय उसके माता पिताने उमरावजानके हाथ उसे बेच डाला था। वे दोनों अभीतक जीवित हैं; परन्तु कमिशनके साम्हने उन्होंने जैसी गवाही दी है, उससे सच झूटका निर्णय करना कठिन है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्राचीन कालमें हिन्दू-राजाओंका यह नियम था कि, वे राजकोषसे कुछ रुपये देकर अपने राज्यमें, विशेषकर अपनी राजधानीमें, वेश्या नौकर रखते थे। क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि, किसी शुभ कार्य्यके आरम्भमें, अथवा शुभयात्रासे पहले, वेश्या-दर्शन मंगलसूचक होता है। इसी प्राचीन नियमके अनुसार, महाराज माधवसिंहके समयमें, उमरावजान १२५) रु० मासिक पन्ना-दरबारसे पाती थी।

वेश्याका काम करने और दरबारसे सहायता पानेके अतिरिक्त, उमरावजानने एक दूसरे काममें भी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। जब कभी वह बिना मां बापकी किसी सुन्दरीको राज्यमें देखती थी, तो उसे लाकर अपने घरमें पालती थी। इस तरह, प्रायः सदाही उसके यहां ७।८ नवयुवतियां, विशेषकर नाचनेगानेवाली स्त्रियां रहा करती थीं। जिस सुन्दरीकी अवस्था अधिक होती थी, उसे वह किसी विशेष व्यक्तिके हाथ बेच दिया करती थी। उमरावजान अभीतक यही रोजगार करती है। ऊपर लिखी मखुरिया अथवा तुलसियाकी कन्याको खरीदकर, उमरावजानने बड़े यत्नसे अपने घरमें स्थान दिया और "हैदरजान" उसका नाम रखा। थोड़ेही दिनोंमें हैदरजानने उमरावको अपने ऊपर बहुत प्रसन्न कर लिया, और छोटी अवस्थामेंही बड़े प्रेमसे नाचना गाना सीखना आरम्भ किया। अति शीघ्र

उसने अपने काममें ऐसी उन्नति कर ली कि, लोग उसे देखकर उसके प्रेमफाँसमें उलझने लगी। हैदरजानको ऐसी रूपवती और गुणवती देखके, उमरावजानकी मां, जबलपूर, कट्नी, मैहर आदि अनेक स्थानोंमें उसको अपने साथ लेकर जाने और बहुत धन उपार्जन करने लगी।

महाराज माधवसिंहके सिंहासनपर बैठनेके छः महीने बाद, कई स्थानोंसे होकर, हैदर, पन्नामें आयी थी। एकदिन, उमरावजानने उसे अच्छे अच्छे कपड़े गहने पहना और खूब सँवार सिंगारकर, राज-दरबारमें गानेके लिये भेज दिया। हैदरजानने महाराजके साम्हने मुस्कुरा मुस्कुराकर, यह गाना गाया,—

गज़ल।

मालूम तुमको भी हो किसी पर जो आये दिल।
नाहक सताया करते हो साहब पराये दिल॥
मिट्टी हुआ हवा हुआ पामाल हो गया।
क्या पूछते हो खाक कहूँ माजराये दिल॥
जुल्फोंमें फँसके सैकड़ों झटके उठा चुके।
लाजिम है अब मुआफ भी कर दो खताये दिल॥
जख्मी इसे न कीजिये तेगे निगाह से।
देना पड़ेगा आपको भी खूं बहाये दिल॥
दोनोंका एक हाल है ईजाय हिज्रमें।

रोता है मेरे वास्ते दिलमें बराये दिल ॥
है आशना वही जो बुझाये लगी हुई ।
वह दोस्त है जो दोस्तकी खातिर जलाये दिल ॥
औरोंके जब हुजूरमें तुहफे गुजर चले ।
हम नज्र देनेको सरे दरबार लाये दिल ॥
सुनते हैं आजकल वे खरीदार दिलके हैं ।
धोखेसे कोई जाके मेरा बेच लाये दिल ॥
उठते तो बज्मे-यारसे आबिद उठे मगर ।
हर हर क़दम पः मुँहसे निकलता है हाय दिल ॥

हैदरजानका गाना सुनकर महाराज माधवसिंह मुग्ध होगये। उस दिन तो बहुत कुछ इनाम पाकर वह विदा हुई; परन्तु उसी दिनसे नित्य राजदरबारमें जाने और वहीं रात बिताने लगी। महाराज, हैदरके रूपगुणपर इतने मुग्ध हुए कि, लखनऊसे अयोध्याप्रसाद नामक एक सुप्रसिद्ध गायकको बुलाकर, उन्होंने उसकी शिक्षाका उत्तम प्रबन्ध कर दिया। उस समय भी हैदरजान, उमरावजानहीके यहां रहा करती और महाराजसे बहुत रुपये तथा अलङ्कारादि इनाममें ले जाया करती थी। पीछे, महाराजकी आज्ञा हुई कि, हैदरजान राजमहलहीमें रहा करे। पहले तो राजमहलमें आकर भी वह खुल्लमखुल्ला नाचती, गाती और सबके साम्हने हँसी दिल्लगी किया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करती थी, परन्तु १९०० ई० के जनवरी मासमें, लाहौरसे आकर, महाराजने हैदरको पर्देके अन्दर रहनेकी सलाह दी। हैदरजानने वैसाही किया । महाराजकी माँने उन्हें "कमलकुमारी"के नामसे पुकारना आरम्भ किया और फाल्गुन मासमें, बड़े उत्सवके साथ, रानी कमलकुमारीने राजमहलमें प्रवेश किया। रङ्गमहलका एक विशेष अंश उनके रहनेके लिये ठीक किया गया। रानी कमलकुमारी, हिन्दूमतके अनुसार, अन्तःपुरमें रहने लगीं।

महाराज माधवसिंहकी दो ब्याही स्त्रियां थीं। दो वर्ष हुए, गर्भावस्थाके आठवें महीनेमें, बड़ी रानी हठात् परलोकको चली गयीं। महाराजकी दूसरी स्त्री—"नन्ही सरकार," अभीतक उनके साथ हैं। "कमलकुमारी" महाराजकी मँझली रानी हैं। बड़ी रानीकी मृत्यु होजानेके पश्चात्, महाराज माधवसिंहने यह बात प्रकाश की, कि उन्होंने कमलकुमारीके साथ गन्धर्वमतसे विवाह कर लिया है; इस कारण, रानी कमलकुमारीको भी अन्य रानियोंकी तरह सब बातोंका अधिकार है। महाराजने यह भी कहा कि, कमलकुमारी तुलसिया और अमानसिंह नामक विशुद्ध ठाकुर दम्पतीकी लड़की हैं, अतएव उसको रानी बनानेसे उनकी मर्य्यादा कुछ घट नहीं गयी। रानी कमलकुमारी, छोटी अवस्थामें कुछ दिनतक वेश्याके घरमें

रही थीं, इसके प्रायश्चित्तके लिये, महाराजने रङ्गमहलमें एक शिव-मन्दिर स्थापित करा दिया, जिसमें वे शिवपूजन करने लगीं। इसके सिवाय, उनके मन्त्रगुरुओंने पन्नाके सब देवालयोंमें लेजाकर उनको दर्शन करा दिये। वेश्याके घरमें पली हुई एक ऐसी नर्त्तकीके, जिसके मां बापका ठीक ठीक पता किसीको नहीं मालूम था, अन्तःपुरमें स्थान पाने तथा सब देवालयोंमें जाकर दर्शन करनेसे, पन्नाके अधिकांश लोग बहुतही चिढ़ गये। रावराजा खुमानसिंहने भी असन्तुष्टि प्रकाश की, और वे इस बातकी विशेष चेष्टा करने लगे कि, कमलकुमारीके गर्भसे उत्पन्न हुआ कोई बालक, भविष्यत्में पन्नाके सिंहासनपर न बैठने पावे। उधर, प्रधानमन्त्री रावपृथिवीपालसिंह और महाराजके सब मुसलमान कर्मचारी तथा मित्रगण, उन्हें इस बातकी सलाह देने लगे कि वे रानी कमलकुमारी को विवाहिता स्त्री स्वीकार कर लें। किन्तु माता और मामाके इस विषयमें सम्मत न होने तथा यह कहकर भय दिखानेसे कि खुमानसिंह शिमला जाकर नालिश करेंगे, महाराजको विवाहका प्रस्ताव एकदम रोक देना पड़ा। निदान, कमलकुमारीके विशेष अनुरोध से, महाराजने बुन्देलखण्डके प्रधान शास्त्रज्ञ पण्डित महादेव दीक्षितका शरण लिया। महादेव पण्डितने यह व्यवस्था दी कि, यदि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रानी कमलकुमारीका जन्म उच्च कुलमें हुआ हो और वे अज्ञानावस्थामें कई वर्षतक मुसलमान के घरमें रही हों, तो उनके साथ विवाह करनेमें कोई दोष नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि रानी साहिबका शास्त्रके अनुसार प्रायश्चित्त होनाभी आवश्यक है। उनके साथ गन्धर्व-विवाह करके उनको घरमें रखनेसे सब दोष दूर हो सकते हैं। उस समय रानी कमलकुमारीके गर्भसे पुत्र उत्पन्न होनेवाला था। अतएव, जिसमें कि कमलकुमारीके साथ उनका विवाह होना प्रकाशित हो, इसके लिये महाराज एजेन्सीमें उद्योग करने लगे।

इसी समय लेडी कर्जनने, स्वर्गीया महारानी विक्टोरियाका स्मृतिचिन्ह स्थापन करनेके लिये, चन्दा एकत्र करना आरम्भ किया था। महाराज माधवसिंहने, रानी कमलकुमारीके नामसे दो हजार रुपये इस चन्देमें भेजे थे। यथासमय लाटपत्नीकी ओरसे धन्यवाद-सूचक एक पत्र आया। वह पत्र, एजेन्सीसे होकर रानी कमलकुमारीके पास पहुंचाया गया। पत्रके शिरपर रानी कमलकुमारीके लिये "महेन्द्रानी भूपेन्द्रानी" लिखा था। इससे किञ्चित् उत्साहित होकर कुछ दिनतक महाराज शान्त रहे। उसके बादही रावराजाकी मृत्यु हुई।

इसके पश्चात्, पौष मासके प्रथम सप्ताहमें, रानी कमलकुमारीके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई। उस समय भी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नौगञ्जमें कमिशनका विचार चल रहा है। महाराज, कमलकुमारीके प्रसवके समय, ४।५ दिनतक कमिशनके साम्हने उपस्थित न हो सके थे। कन्याके जन्म लेनेपर किसी प्रकार का आनन्द नहीं मनाया गया था। कारण, उसके माता पिता दोनोंही उस समय भारी अपराधमें पकड़े गये थे।

महाराज माधवसिंह कमलकुमारीको इतना चाहते थे कि, बहुत देरतक उनको न देखकर, स्थिर न रह सकते थे। दो बार वे देश-भ्रमण करने निकले थे, और दोनोंही बार रानी कमलकुमारी उनके साथ थीं। तीसरी बार, जब कमलकुमारी अपने मन्त्रगुरुओंके साथ प्रयागमें गङ्गा-स्नान करने गयी थीं, उस समय वे उनके साथ जा नहीं सके थे; परन्तु, प्रतिदिन वहांके समाचार उनको मिल जाया करते थे। किन्तु, इतने सुखकी अधिकारिणी होनेपर भी, थोड़ेही दिनोंमें रानी कमलकुमारीके भाग्यने पलटा खाया। रावराजाकी अकस्मात् मृत्यु होजाने कारण, बहुत लोगोंको इस बातका सन्देह होने लगा कि, महाराज और रानी साहिबा दोनों, इस हत्याकाण्डमें शामिल थे। अतएव, यह बात गवर्णमेण्टके कानोंतक भी पहुँच गयी और कायदेके अनुसार जाँच आरम्भ हुई। इसके बाद जो कुछ हुआ, वह आगे लिखा जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पांचवां परिच्छेद ।

विचारका आरम्भ ।

सन् १८०१ ई०के जून मासके प्रारम्भमें, अपने साथ कुछ आदमियोंको लेकर, महाराज माधवसिंह शेरका शिकार करनेके लिये शाहनगर गये। रथयात्राके समय, महाराज रुद्रप्रतापकी किसी जारज कन्याके साथ, नेपालके प्रसिद्ध मन्त्री जङ्गबहादुरके एक पौत्रका विवाह होना स्थिर हुआ था। उस समय, विवाहका उत्सव देखनेके लिये, बहुत लोग पन्नामें आये थे। महाराज माधवसिंहने, शाहनगरसे चचा खुमानसिंहको इस विषयका एक पत्र लिखा कि कुछ दिन के लिये वे रानीबाग छोड़कर पन्नामें चले आवें, और महलके पासही राजमन्दिर नामक स्थानमें आकर रहें, और रथयात्रा तथा विवाहका प्रबन्ध करें। पीछे, महाराज माधवसिंहने यह बात प्रकाश की, कि इसी विवाहके व्ययके सम्बन्धमें किसी बातपर रावराजासे उनसे बहस हुई थी; इसी कारण विवाहके समय वे पन्नामें नहीं आये थे। अस्तु; महाराजका पत्र पातेही रावराजा अपने तीनों पुत्रोंके सहित रानीबागसे आके, राजमन्दिर नामक स्थानमें रहने लगे। उस समय राजमहलसे महाराजके नौकर चाकर आकर, उनके कामकाज करने लगे। रानीबागसे वे अपने खास नौकर नहीं लाये थे, और लानेकी कुछ विशेष आ-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वश्यकता भी नहीं थी। इसी समयमें, लक्ष्मीप्रसाद नामक एक आदमी, महाराजकी पाकशाला (रसोई-घर) का दारोगा था। जिस किसीको भोजन बनानेवालोंकी आवश्यकता होती थी, वह लक्ष्मीप्रसादसेही कह दिया करता था। राजमन्दिरमें आकर, एक दिन रावराजाने लक्ष्मीप्रसादको यह आज्ञा दी कि, वह किसी मांस-पकानेवाले आदमीको उनके लिये बुला दे। इसपर, शम्भू नामक एक व्यक्तिको, जो महाराजकी पाकशालामें नौकर था और अच्छा मांस पका सकता था, २० जूनको लक्ष्मीप्रसादने राजमन्दिरमें रावराजाके पास भेज दिया।

इससे पहलेही रानी कमलकुमारी गङ्गास्नान करनेके लिये इलाहाबाद जा चुकी थीं। १९ या २० जूनको, महाराजके अनुरोधसे वे पन्नामें लौट आयीं। डाक्टर श्रीनाथकी रिपोर्टसे मालूम होता है कि इसी १९वीं या २०वीं तारीखको, महाराजका हिन्दी-पेशकार अच्छेलाल, अस्पतालमें जा और डाक्टर साहबसे यह बहानाकर कि अजयगढ़के रहनेवाले किसी रिश्तेदारको दवामें देना है, कई ग्रेन "ष्ट्रीक्‌निया" नामक भयानक विष ले आया। डाक्टर श्रीनाथ घोष कलकत्तेके मेडिकल कालेजसे M. B. परीक्षा पासकर, १७ वर्षसे पन्नाराज्यमें डाक्टरी करते थे; परन्तु, पुराने कर्मचारी होकर भी, महाराजके मित्र अच्छेलालकी बातको

वे अस्वीकार करनेका साहस न कर सके। सच है कि जिस आदमीपर राजाकी कृपा रहती है, उससे सभी डरते हैं। इसलिये, यदि डाक्टरबाबूने अच्छेलालको ज़हर दे दिया, तो कोई आश्चर्यका काम नहीं किया।

२२ जूनको एक बजे दिनसे रावराजाके मँझले और छोटे लड़केने कै करना आरम्भ किया। तीन बजे रावराजाने श्रीनाथबाबूको बुलाकर कहा कि, "दोनों लड़कोंने आज पक्का आम खाया है, मालूम होता है कि इसी कारण वे कै कर रहे हैं; आप उनके लिये कोई अच्छा नुसखा लिख दें।" डाक्टरबाबूने नुसखा लिख दिया। इस औषधिसे वमन होना बन्द हुआ और सायङ्कालसे पहले, दोनों लड़के सो गये। रावराजाकी मृत्युके पश्चात् यह बात प्रकाशित हुई कि, दारोगा लक्ष्मीप्रसादने उनके पास थोड़ीसी मिठाई भेजी थी, वही मिठाई खाकर दोनों लड़कोंने कै करना आरंभ किया था, और उनके किसी नौकरकी एक लड़की, जिसने उसमेंसे कुछ मिठाई खायी थी, अपने घर जाकर मर गयी थी। लोग समझते हैं कि यह मिठाई ज़हरीली थी, परन्तु दुःखकी बात है कि, रावराजाको इसपर कुछ सन्देह नहीं हुआ, न उन्होंने डाक्टर श्रीनाथसेही इस मिठाईके विषयमें कोई बात कही।

२४ जूनको, ८ बजे दिनके समय, महाराज माधवसिंह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शाहनगरसे चला आये। उनके आनेके कुछ देर बाद, रावराजा, महेन्द्र-भवनमें जाकर उनसे मिले, और विविध विषयकी बातें करनेके पश्चात्, १० बजनेके लगभग राजमन्दिरको लौट आये। १ बजे, डाक्टर श्रीनाथघोषको अपने साथमें लेकर, कुछ नेपालियोंसे मिलनेके लिये वे उनके घर गये। वहांसे आकर, स्नानादि के अनन्तर, दो बजनेसे पहले वे भोजन करने बैठे। डाक्टरबाबूको भी उन्होंने यह कहकर रोक लिया कि भोजनके उपरान्त वेदान्त–विषयक कुछ बातें होंगी। परन्तु दुःखका विषय है कि, रावराजाका यही भोजन, उनके जीवनका अन्तिम भोजन हुआ था।

उस दिन शम्भूने उनके लिये कलिया और कबाब नामक दो तरहके मांस तय्यार किये थे। कई ग्रास कलिया खानेके पश्चात्, ज्योंही कि रावराजाने कबाबका एक टुकड़ा मुखमें डाला, त्योंही उसमें "क्विनाइन"कासा कड़ुआपन उन्हें जान पड़ा। किन्तु एक ग्रासका कुछ हिस्सा खाकर, कुछ उन्होंने उगल दिया और उसी समय डाक्टर श्रीनाथको बुलाकर, उनसे मांसके तिक्त स्वादका हाल कहा। डाक्टरबाबूने वह मांस खानेको उन्हें मना किया और राजमन्दिरके द्वारपर पहरा-देनेवाले सिपाहीके पास उसे रखवा दिया। रावराजाने शम्भूसे पूछा कि, आजका मांस इतना तीता क्यों है ? शम्भू बोला कि फोड़नमें मेथी-

के जल जानेके कारण आजका मांस तीता होगया है। यह कहकर वह. वहांसे चला गया। रावराजाने केवल कलिया खाया, क्योंकि उसका स्वाद बिगाड़ा नहीं था। पर कलियाका रङ्गभी सुफेद था, किन्तु रावराजाने उसपर ध्यान नहीं दिया, वरन् यह समझा कि उसमें दही अधिक पड़ गया है। डाक्टर साहबने भी उनकी बातपर विश्वास करके, यह नहीं सोचा कि उसमें विष है, न उसको जाँचके लिये उसे पहरेवाले सिपाहीके पास रखा।

मुख धोनेके पश्चात् १० मिनटके बीचमें रावराजा वमन करने लगे, और उनको कुछ नशासा मालूम होने लगा। डाक्टर बाबूके साम्हनेही, एक घण्टेमें उनको तीन कै और दो दस्त हुए। उस समय श्रीनाथबाबूने समझा कि रावराजाको विष दिया गया है, और तुरन्त ऐसी औषधि लाके उनको खिलायी, जिससे कै हो। उस औषधिके सेवन करानेका यह फल हुआ कि, रावराजाने जो कुछ खाया था वह सब ५ बजेतक कैके रास्ते निकल गया। ५ बजनेके पश्चात्, डाक्टरबाबूने उस सन्दिग्ध मांसका कुछ अंश, जिसे पहरेवाले सिपाहीके पास रखवा दिया था, एक कुत्तेको खिलाया। मांस खानेके एक घण्टेके भीतरही भी-तर वह कुत्ता मर गया। तब डाक्टरबाबूने सबसे कह दिया कि, अच्छेलाल अस्पतालसे "ष्ट्रीकनिया" लाया था, और निश्चय इस सन्दिग्ध मांसमें वह

विष मिलाया गया है। परन्तु हर्षका विषय है कि मांसका स्वाद तिक्त होनेके कारण, रावराजाने उसे नहीं खाया।

उसी समय, महाराजके दो मित्र अच्छेलाल और रसूल मुहम्मद, राजमन्दिरमें आकर, बचे हुए दोनों प्रकारके मांस महाराजके पास ले गये। परन्तु डाक्टरबाबूने कबाबका कुछ अंश रावराजाकी रानीके पास छिपाकर रखवा दिया था; और रावराजाको जितनी कै हुई थीं, उनको भी श्रीनाथबाबूके परामर्शसे रावरानीने छिपा रखा था। ३ बजेसे लेकर रातके १० बजेतक, रावराजाको एक भी पाखाना नहीं हुआ; किन्तु ६ बजनेके बाद उनको एक दस्त हुआ। उस दस्त और दूसरे लक्षणोंको देखकर, डाक्टरबाबूने स्थिर किया कि रावराजाको संखिया खिलायी गयी है। अब उनको अपनी भूल मालूम हुई कि कलियेका रङ्ग सुफेद क्यों था!

अस्तु, रातभर डाक्टर श्रीनाथघोष संखिया विषकी चिकित्सा करते रहे। दूसरे दिन प्रातःकाल रावराजा बेहोश होगये और १० बजे उनका प्राणवायु उड़ गया। २४ जूनकी रातको, १२ बजनेके बाद, जिस समय रावराजाने देखा कि उनकी यन्त्रणा धीरे धीरे बढ़ती जाती है, तो उन्होंने नीमचके एजेण्ट साहब और इन्दोरके एजेण्ट-गवर्नर-जेनरलके पास एक पत्र लिखा कि "महाराजके

रसोईदारने हमको विष खिलाया है—इस कारण हम मर रहे हैं। आपलोग इसका विचार कीजियेगा।" इन दो पत्रोंके सिवाय, रावराजाने छत्रपुरके महाराजके पास भी इसी विषयका एक पत्र लिखा। सन्दिग्ध मांस खानेके २० घण्टेके बीचमें उनकी मृत्यु हुई। डाक्टरबाबूके मतसे संखिया-विषही उनकी मृत्युका कारण हुआ। रावराजाके परलोक-गमनसे एक घण्टे पहले, महाराज माधवसिंह दो मिनटके लिये उनको देखनेके निमित्त आये थे। परन्तु दुःखकी बात है कि, महाराज और उनके सब कर्म्मचारीगण उस समय वहां उपस्थित थे, किन्तु जिस शम्भूने मांसमें विष मिलाया था, उसके पकड़े जानेकी किसीने भी आज्ञा न दी।

मरनेके बादभी डाक्टरबाबूको रावराजाकी लाशकी परीक्षा करनेकी आज्ञा नहीं मिली। परन्तु रावराजाके सम्बन्धी शोभासिंहको उन्होंने चुपचाप सलाह दी कि, आप लोग नीमच्छके एजेन्सीसर्जनसे रावराजाके मृतशरीरकी परीक्षा करा लीजियेगा।" अतएव, उनकी मृत्युके पश्चात्, उनकी दोनों रानियाँ बग्गी गाड़ीपर सवार हो और पतिके मृत शरीरको उसमें रखकर, छाती और शिर पीटती हुई रानीबाग गईं, और वहांसे नीमच्छ जानेका उद्योग करने लगीं। परन्तु राज्यके प्रधान प्रधान कर्म्मचारियों तथा स्वयं महाराज माधवसिंहने रानीबाग जाकर लाशको नी-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गढ़ जानेसे रोक दिया और रानीबागमेंही उसके जलाने का प्रबन्ध कर, चार बजनेके समय वे पन्नाको लौट आये। दूसरे दिन, जब महाराजने सुना कि, मृत्युसे पूर्व रावराजाने एजेण्ट-गवर्नर-जेनरलके पास पत्र भेज दिये थे, तब वे रानीबाग जाकर इस बातकी चेष्टा करने लगे कि, दोनों रावरानियाँ और उनके भाई, उनके विपक्षमें कोई काम न करें।

उस समय महाराज माधवसिंहने रावराजाके पुत्रोंको जागीर, और छोटी रावरानी तथा उनके भाई शोभासिंहको वृत्ति देकर सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा की। इसपर रावरानियोंकी ओरसे पोलिटिकल एजेण्ट साहबके पास इस मर्म्मका एक पत्र लिखा गया कि, रावराजाकी मृत्यु विष खिलाये जानेसे नहीं, किन्तु स्वाभाविक कारणसेही हुई है।

रावराजाकी मृत्युके चार दिन बाद, नौगढ़के एजेन्सी सर्जन केप्टन् डेक्ब्रक्मैन् साहब, अस्पताल देखनेके लिये पन्ना आये। केप्टेन् साहब उस समयतक रावराजाकी मृत्युका हाल नहीं जानते थे। जिस समय वे अस्पताल देखनेके लिये पन्ना आये, उस समय डाक्टर श्रीनाथ घोषने उनसे कहा कि रावराजाकी मृत्यु स्वाभाविक कारणसेही हुई है। उसी समय केप्टेन् साहबको रावरानियोंकी ओरसे एक पत्र मिला। उस पत्रमें, रावरानियोंकी कुछ बातें

सुन लेनेके लिये केप्टेन् साहबसे अनुरोध किया गया था। केप्टेन् साहबने उस पत्रके उत्तरमें यह लिखा कि, रावरानियोंकी ओरसे बातें करनेके लिये जो आदमी उनके पास आवे, उसकी सब बातें सुननेके लिये वे तय्यार हैं। यह पत्र पाकर, छोटी रावरानीके भाई शोभासिंह और गृह-शिक्षक वंशगोपाल, एजेन्सी सर्जन साहबके पास गये और रावराजाकी मृत्युके सम्बन्धमें जितनी घटनाएँ हुई थीं, उन सब का वृत्तान्त उन्होंने उनसे कह दिया। इसके बाद, जिस समय केप्टेन् साहब रानीबाग गये, उस समय डाक्टर श्रीनाथघोषके परामर्शसे रावरानियोंने जो बचा हुआ मांस और वमित पदार्थ छिपा रखा था, उसे उनके पास भेज दिया। केप्टेन् साहबने उसे नौगञ्जसे आगरे भेजा। वहां रासायनिक परीक्षासे निश्चय हुआ कि, मांसमें "ष्ट्रीक्निया" और वमित पदार्थमें "आर्सिनिक्" अथवा संखिया नामक विष मिलाया गया है।

सन् १९०१ ई०के जुलाई मासकी १५वीं तारीखको, बुन्देलखण्डके पोलिटिकल एजेण्ट केप्टेन् वेविलसाहब, स्वयं इस विषयकी जाँच करनेके लिये पन्ना आये। इससे पहले, महाराजके सेक्रेटरी म्यान्लीसाहब, महाराजसे छुट्टी लेकर चले गये थे, और श्रीनाथबाबू भी अपने घरवालोंको कलकत्ते भेजकर निश्चिन्त होगये थे। पीछे, यह बात सुननेमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आयी कि, स्यान्लोसाहबने रावराजाकी मृत्यु-सम्बन्धी सब बातें खुल्लमखुल्ला लिखकर, अलवरसे इन्दोरके एजेएट-गवर्नर-जेनरलके पास एक गुमनाम पत्र भेजा था, और डाक्टर श्रीनाथघोषने, अपनेको हर तरहसे विपद्में पड़ा हुआ देखकर, कलकत्तेमें अपने वृद्ध पिताको एक पत्र लिखा था कि वे उनको परामर्श देनेके लिये एक बैरिष्टर भेज दें। अस्तु, स्यान्लोसाहबके पत्रके मर्म्मानुसार, केप्टेन् वेविलने अनुसन्धान करना आरम्भ किया। इधर श्रीनाथघोषका पत्र पाकर, उनके पिताने, मि: हीरालाल कुमार नामक एक बैरिष्टरको परामर्श देनेके लिये पन्ना भेज दिया। मि: कुमार, १७ वीं जुलाईकी सन्ध्याके समय पन्नामें आकर डाक्टरबाबूके मकानपर ठहरे, और रातभर वे उनको कुछ सलाह देते रहे। दूसरे दिन, केप्टेन् वेविलकी आज्ञासे, श्रीनाथबाबू पुलिसके पहरेमें रखे गये; इसलिये, और परामर्श देनेका सुयोग न पाकर, मि: कुमार कलकत्ते लौट गये। डाक्टरबाबूने भी नौकरीसे जवाब देकर, एजेएटसाहबको सब बातें साफ साफ लिखा दीं। प्राणभयसे उस समय उनको केप्टेन् वेविलके शिविरमें रहना पड़ा था। पीछे, दो मासतक नौगाङ्ग-एजेन्सीकी पुलिसके पहरेमें भी वे रखे गये। स्यान्लो साहबने भी, अलवरसे नौगाङ्ग आकर, वेविल साहबसे सब बातें कह दीं। श्रीनाथबाबू और स्यान्लो साहबके दूज़-

हार लिखकर, पोलिटिकल एजेण्ट साहबने गवर्नमेण्टके पास उन (इज़हारों) की रिपोर्ट भेजी। इसका फल यह हुआ कि, पन्नाराज्यपर अधिकारकरलेनेकी गवर्नमेण्टसे उनको आज्ञा मिली। पन्नाके इस मुकद्दमेकी जाँच करनेके लिये, ठगी और डकैती विभागके इन्स्पेक्टर, सर्दार बहादुर दयालसिंहजी नियुक्त थे। आपने इस काममें बड़ा परिश्रम किया था। हमें विश्वास है कि, सर्दार दयालसिंहजीकी सहायता पाये विना, केप्टेन् वेविल, महाराजके विरुद्ध इतने प्रमाण कदापि संग्रह न कर सकते। परन्तु क्या एक हिन्दुस्थानी कर्म्मचारीको भी उसके परिश्रमका उपयुक्त पुरस्कार कभी मिल सकता है?

सन् १९०१ ई०के सितम्बर महीनेकी १२वीं तारीख-को, गवर्नमेण्टकी आज्ञासे, पन्नाराज्यपर अधिकार करनेके लिये, केप्टेन् वेविल अग्रसर हुए। नौगञ्जकी छावनीसे ८० सवार और दो दल पैदल सैनिक लेकर, रातके तीसर प-हर वे अकस्मात् पन्नाकी राजधानीमें जा पहुँचे। घोड़ोंकी टापोंके शब्द और बाजोंकी ध्वनि सुनतेही, पन्नावासियों-की आँखें खुल गयीं। उन्होंने विस्मयसे देखा कि, उनके महाराजको कुछ अङ्गरेज पहरुए चारों ओरसे घेरे हुए, पासके सफरबाग नामक स्थानकी ओर लिये जाते हैं!

महाराज माधवसिंह सफरबागमें पहुँचाये गये। धीरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आयी कि, म्यान्लीसाहबने रावराजाकी मृत्यु-सम्बन्धी सब बातें खुल्लमखुल्ला लिखकर, अलवरसे इन्दोरके एजेण्ट-गवर्नर-जेनरलके पास एक गुमनाम पत्र भेजा था, और डाक्टर श्रीनाथघोषने, अपनेको हर तरहसे विपद्में पड़ा हुआ देखकर, कलकत्तेमें अपने वृद्ध पिताको एक पत्र लिखा था कि वे उनको परामर्श देनेके लिये एक बैरिष्टर भेज दें। अस्तु, म्यान्लीसाहबके पत्रके मर्म्मानुसार, केप्टेन् वेविलने अनुसन्धान करना आरम्भ किया। इधर श्रीनाथघोषका पत्र पाकर, उनके पिताने, मि: हीरालाल कुमार नामक एक बैरिष्टरको परामर्श देनेके लिये पन्ना भेज दिया। मि: कुमार, १७ वीं जुलाईको सन्ध्याके समय पन्नामें आकर डाक्टरबाबूके मकानपर ठहरे, और रातभर वे उनको कुछ सलाह देते रहे। दूसरे दिन, केप्टेन् वेविलकी आज्ञासे, श्रीनाथबाबू पुलिसके पहरेमें रखे गये; इसलिये, और परामर्श देनेका सुयोग न पाकर, मि: कुमार कलकत्ते लौट गये। डाक्टरबाबूने भी नौकरीसे जवाब देकर, एजेण्टसाहबको सब बातें साफ साफ लिखा दीं। प्राणभयसे उस समय उनको केप्टेन् वेविलके शिविरमें रहना पड़ा था। पीछे, दो मासतक नौगङ्गएजेन्सीकी पुलिसके पहरेमें भी वे रखे गये। म्यान्लो साहबने भी, अलवरसे नौगङ्ग आकर, वेविल साहबसे सब बातें कह दीं। श्रीनाथबाबू और म्यान्लो साहबके इज़-

हार लिखकर, पोलिटिकल एजेण्ट साहबने गवर्नमेण्टके पास उन (इज़हारों) की रिपोर्ट भेजी। इसका फल यह हुआ कि, पन्नाराज्यपर अधिकारकरलेनेकी गवर्नमेण्टसे उनको आज्ञा मिली। पन्नाके इस मुकद्दमेकी जाँच करनेके लिये, ठगी और डकैती विभागके इन्स्पेक्टर, सर्दार बहादुर दयालसिंहजी नियुक्त थे। आपने इस काममें बड़ा परिश्रम किया था। हमें विश्वास है कि, सर्दार दयालसिंहजीकी सहायता पाये विना, कैप्टेन् वेविल, महाराजके विरुद्ध इतने प्रमाण कदापि संग्रह न कर सकते। परन्तु क्या एक हिन्दुस्थानी कर्म्मचारीको भी उसके परिश्रमका उपयुक्त पुरस्कार कभी मिल सकता है?

सन् १९०१ ई०के सितम्बर महीनेकी १२वीं तारीख-को, गवर्नमेण्टकी आज्ञासे, पन्नाराज्यपर अधिकार करनेके लिये, कैप्टेन् वेविल अग्रसर हुए। नौगञ्जकी छावनीसे ८० सवार और दो दल पैदल सैनिक लेकर, रातके तीसर प-हर वे अकस्मात् पन्नाकी राजधानीमें जा पहुँचे। घोड़ोंकी टापोंके शब्द और बाजोंकी ध्वनि सुनतेही, पन्नावासियों-की आँखें खुल गयीं। उन्होंने विस्मयसे देखा कि, उनके महाराजको कुछ अङ्गरेज पहरुए चारों ओरसे घेरे हुए, पासके सफरबाग नामक स्थानकी ओर लिये जाते हैं!

महाराज माधवसिंह सफरबागमें पहुँचाये गये। धीरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धीरे राज्य भी ले लिया गया। केप्टेन् बेविलने, एजेन्सी सर्जन केप्टेन् ड्रेकब्रेकमैन और सर्दार बहादुर दयालसिंह-के साम्हने, पन्नाके खजानेको आपने अधिकारमें करलिया। उस समय पन्नाके कोषागारमें एक लाख अशर्फियाँ और प्रायः ३३ लाख रुपयोंके जवाहरात मौजूद थे। राज्याधिकारके पश्चात्, महाराज माधवसिंह, पन्नाके सफरबागसे नौगञ्ज पहुँचाये गये। उस समय, जबतक नौगञ्जके कमिश्नरोंका विचार समाप्त नहीं हुआ, तबतक महाराजको पुलिसकी नज़रबन्दीमें वहीं रहना पड़ा। पश्चात्, दिसम्बर मासकी अन्तिम भागमें, बड़ेदिनके बाद, सतनामें विचारकी बैठक बैठी। वहां कुछ दिन रहकर, महाराजको पुनः नौगञ्ज लौट आना पड़ा। महाराजकी माँ, उनकी दोनों बहिनें, रानी कमलकुमारी और छोटी रानी नन्हीं सरकार, बराबर उनके साथ थीं और अबतक हैं। इन लोगोंके सिवाय, महाराजके मामा, दीवान साहब और कुछ विश्वासी कर्म्मचारियोंने भी उनका साथ नहीं छोड़ा।

छठां परिच्छेद ।

कमिशनका संक्षिप्त इतिहास ।

पन्नाराज्यपर अधिकार करलेनेके पश्चात् मि: ग्यान्लोके हाथमें राज्य-शासनका भार सौंपकर, केप्टेन् वेविल, स्वयं मुकद्दमेके लिये गवाह एकत्र करने लगे । अवश्यही सर्दार बहादुर दयालसिंहने इससे पहले जिन गवाहोंको एकत्र किया था, वेही उनके साम्हने पेश किये जाने लगे । निरन्तर कई दिनोंतक गवाहोंके इजहार लेनेके पश्चात्, केप्टेन् वेविलने देखा कि, वे अकेले १२५ आदमियोंके इज़हार लिख न सकेंगे, और यदि लिख भी सकेंगे, तो उनके दूसरे कामोंमें बहुत हर्ज होगा । अतएव लाचार होकर अपनी असुविधाकी बात गवर्नमेण्टके कानोंतक उन्हें पहुँचानी पड़ी । इसपर गवर्नमेण्टने देहरादूनके पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट शार्प साहबको इस कामके लिये पत्र भेज दिया । शार्प साहबने, असामियों और १२५ गवाहोंके इजहार लिखकर, कुछ दिनोंमें केप्टेन् वेविलके पास उनको भेज दिया ।

इसके अनन्तर, १९०१ ई० के नवम्बर महीनेकी सोलहवीं तारीखको, भारत गवर्नमेण्टने पन्नाके मुकद्दमेके विषयमें "इण्डिया गेज़ेट्" नामक पत्रमें शिमलेसे जो विचार प्रकाश किया, उसके अनुसार, मि: ई० ग्रेमियर और

मि: ए०एल०पी० टकर नामक दो अङ्गरेज, प्रजाके मुकद्दमेके विचारक बनाये गये। २० नवम्बर अर्थात् बुधवारको, बुन्देलखण्डकी पोलिटिकल एजेन्सी नौगाँवमें कमिशनका * पहला अधिवेशन हुआ। शेमियर साहब अयोध्यासे और टकर साहब अजमेरसे आके, राजकुमार कालेजके साम्हने खेमे खड़े कराकर रहने लगे। नौगाँवका राजकुमार कालेज बहुत दिनोंसे टूट गया है, परन्तु कालेजकी इमारत अभीतक वर्त्तमान है। इसी इमारतमें कमिशनकी बैठक हुई।

गवर्नर-जेनरलकी ओरसे मि: वैलक् इस मुकद्दमेके वादी नियुक्त हुए। रावरानियोंनेभी, अपने व्ययसे, मि: मोहनलाल नामक एक बैरिष्टरको मि: वैलक्की सहायताके लिये नियुक्त किया। इनके सिवाय दो कोर्ट इन्सपेक्टर, सर्दार बहादुर दयालसिंह और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट शार्प साहब, वादीपक्षको सलाह देनेके लिये बराबर अदालतमें तय्यार रहते थे। केप्टेन् वेविल भी बीच बीचमें उपस्थित रहकर यथाशक्ति सहायता करनेमें त्रुटि नहीं करते थे। इधर महाराजकी ओरसे इलाहाबाद हाईकोर्टके सुप्रसिद्ध बैरिष्टर मिष्टर कालविन नियुक्त किये गये थे, और

* "कमिशन" अर्थात् किसी कामके निमित्त नियुक्त जनसमूह अथवा किसी कार्य्यके निमित्त नियुक्त पञ्च।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनके सहकारी बेरिष्टर मि: ओक्नर साहब भी उनके साथ थे। इनके सिवाय, इलाहाबाद-हाईकोर्टके सुप्रसिद्ध वकील मुंशी गोकुलप्रसाद और बाँदा जिलेके एक होशियार मुख्तार मुंशी माताप्रसाद भी, कालविन साहबकी सहायताके लिये नियुक्त हुए थे। ये लोग मुकद्दमेके अन्ततक प्रतिदिन अदालतमें उपस्थित रहकर, यथासाध्य सहायता करते रहे। अतएव यह नहीं कहा जा सकता कि, महाराजकी ओरसे उनके बचावके लिये उपाय करनेमें कुछ विशेष त्रुटि हुई।

संवादपत्रोंमेंसे "बङ्गाली" और "पायोनियर"ने, कमिशनके अन्ततक, अपने लिये खास खास संवाददाता नियुक्त किये थे। "अमृतबाजार-पत्रिका"वालोंनेभी, जब नौगाङ्गमें कमिशनकी बैठक थी, अपना संवाददाता भेजा था, किन्तु कमिशनके नौगाङ्गसे उठकर सतना जानेपर, उनके संवाददाताका पता न लगा। इनके अतिरिक्त, एक "हितवादी"को छोड़. किसी देशी संवादपत्रका कोई संवाददाता वहां नहीं गया था।

२० वीं नवम्बर बुधवारको, कमिशनका पहला अधिवेशन हुआ। इजलासपर आकर, सबसे पहले कमिशनर टकर साहबने इस कमिशनके सम्बन्धमें भारत-गवर्नमेण्टकी आज्ञा पढ़ी; तदनन्तर, गवर्नमेण्टपक्षके बेरिष्टर मिष्टर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वेलक्ने उठकर कहा कि, वे इस मुकद्दमेके सब कागज-पत्रोंको अभीतक देख नहीं सके हैं. अतएव उनका यह अनुरोध है कि, कमिशनका अधिवेशन दो चार दिन के लिये रोक दिया जाय। कमिशनरोंने यह प्रस्ताव स्वीकार किया, और दूसरा अधिवेशन आगामी २५ वीं नवम्बरको होना निश्चित हुआ। उस दिन असामियोंके इजहार लिये गये। महाराजके भोजन-बनानेवाले "शम्भू"पर हत्या करनेका अपराध, और स्वयं महाराज, रानी कमलकुमारी, अच्छेलाल, रसूलमुहम्मद तथा लक्ष्मीप्रसादपर यह दोष लगाया गया कि, इन लोगोंने इस हत्यामें सहायता की हैं।

२५ वीं नवम्बरको मुकद्दमा पुनः आरम्भ हुआ। बैरिष्टर वेलक् साहबने जो वक्तृता दी, उससे महाराजपर यह दोष प्रमाणित हुआ कि, रावराजाको विष दिलानेमें उन्होंने सहायता पहुँचायी। वेलक्साहबने और भी कहा कि, "महाराजने कमलकुमारीके साथ विवाह करनेका जो सङ्कल्प किया था, उसमें खुमानसिंहने बाधा देनेकी बहुत चेष्टा की थी; क्योंकि वे जानते थे कि यदि महाराज माधवसिंहके कोई पुत्र न होगा, तो उन्हींके लड़कोंमेंसे एक, पन्नाके सिंहासनपर आरोहण करेगा। इसके अतिरिक्त,जिस समय महाराजने कमलकुमारीको विशुद्ध ठाकुरवंशीया बतलाकर यह बात प्रकाशित करनेकी चेष्टा की थी कि उनके साथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन्होंने शास्त्रके अनुकूल विवाह किया है, उस समय राव-राजाने राज्यके सब राजपूतोंको उनके विरुद्ध उभार दिया था। इसलिये, खुमानसिंहको मारकर अपनेको निष्कण्टक करनाही कदाचित् महाराजका उद्देश्य था।" बैरिष्टरकी वक्तृता समाप्त होनेपर, वादीपक्षके पहले गवाह केप्टेन् बेविलका इज़हार लिखा गया। बेविल साहबने कहा, "महाराज माधवसिंहने पन्ना आकर स्वयं मुझसे इस हत्या-काण्डकी जाँच करनेका अनुरोध किया, और जब मैंने उनसे रावराजाकी मृत्युका कारण पूछा, तब वे बोले कि, सन्यास रोगसे रावराजाका देहान्त हुआ था।"

२७ तारीखको कमिश्नर श्रेमियर साहबने सबसे कहा कि, नौगञ्जमें जितने गवाह उपस्थित हैं, उनके इज़-हार समाप्त होनेपर, कमिश्नकी बैठक यहांसे उठकर "सतना" नामक स्थानमें बैठेगी। तत्पश्चात्, यदि आव-श्यकता होगी, तो कमिश्नर लोग पन्नातक भी जानेके लिये तय्यार हैं। इस बातपर सब लोगोंने सन्तोष प्रगट किया। इसके अनन्तर, क्रमशः मिष्टर ग्यानली, डाक्टर श्रीनाथघोष और कमलकुमारीके दोनों मल्लगुरुओंके इज़-हार लिखे गये। इस मुकद्दमेमें दोनों मल्लगुरुओंके अति-रिक्त किसीकी गवाहीसे इस हत्याका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला। दोनों मल्लगुरुओंके इज़हारका मर्म्म यह है कि,

एक दिन रावराजा और महाराज, राजमहलके किसी कमरेमें बैठे बातें कर रहे थे । उस समय लक्ष्मीप्रसाद, अच्छेलाल और रसूलमुहम्मद दूसरेमें, तथा रानी कमल-कुमारी किसी तीसरे कमरेमें बैठी थीं । वे रावराजाकी हत्या करानेके लिये सबको उत्तेजित कर रही थीं । उस समय शम्भू और अच्छेलालके पास विष था । तीनों, राव-राजाको जहर खिलानेकी शपथ खाकर वहांसे बिदा हुए थे।

२८ दिसम्बरतक नौगञ्जमें प्रतिदिन कमिशनकी बैठक होती रही। उसके बाद, वादीपक्षके बैरिष्टर मि: बैलक्ने कहा कि, महाराजके गवाहोंमेंसे दो तीनसे अधिक आ-दमियोंके इज़हार वे नहीं सुनना चाहते । मि: कालविन अर्थात् महाराज माधवसिंहके बैरिष्टरने इस बातको स्वी-कार किया और दूसरे दिन अपनी ओरके गवाहोंकी एक नामावली उन्होंने अदालतमें पेश की । उस नामावलीमें प्राय: ५० मनुष्योंके नाम लिखे थे। २० दिसम्बरको कमि-शनरोंने नौगञ्ज परित्याग किया, और प्रयागमें बड़ेदिनका त्योहार मनाकर, २६ तारीखको सन्ध्यासे पहलेही, सब लोग सतनेमें पहुँच गये।

महाराजकी ओरसे जितने गवाह आनेवाले थे, उनमेंसे सबको बैरिष्टर कालविनने कमिशनके साम्हने उपस्थित नहीं किये। महाराजके कुछ नौकरों और दो चार अन्य मनुष्योंका

इज़हार लेकरही, ४ जनवरी १९०२ ई० को, सतनासे कमिशनकी बैठक उठ गयी। स्वर्गवासी महाराज रुद्रप्रतापकी विधवा स्त्रियोंकी गवाही ली जानेकी बात थी; किन्तु पहले दिन, जब महाराजके दूसरे बैरिष्टर ओकनर साहबने इज़हार लेनेके लिये आदमी भेजा था, उस समय रानियोंने गवाही देनेमें एकबारही अनिच्छा प्रकाश की थी। इससे ओकनर साहब बहुत विरक्त हुए थे। केवल १० वीं जनवरी शुक्रवारको, कमिश्नर टकर साहब, कई घण्टेके लिये पन्नाके इजलासपर बैठे थे। उसीदिन बलदेवजीके मन्दिरके दोनों पुजारी तथा अधिकारी ब्राह्मणोंके इज़हार लिये गये थे। उसके बाद, कमिश्नर टकर साहब, राजमन्दिर, महेन्द्र-भवन, सफरबाग, रानीबाग प्रभृति स्थानोंको देखकर, अपने शिविरको लौटे थे। केप्टेन् वेविल प्रायः सर्वत्रही उनके साथ थे। दूसरे दिन प्रातःकाल, दोनों आदमी सतने पहुँच गये। १३ वीं जनवरी अर्थात् सोमवारसे लेकर बराबर ५ दिनोंतक दोनों पक्षके बैरिष्टरोंकी वक्तृता होती रही। तत्पश्चात् कमिश्नरोंने राय लिखनेके लिये अवकाश ग्रहण किया। बारह दिनोंके बाद राय प्रकाशित हुई।

इलाहाबादसे जबलपूरतक ईष्ट-इण्डियन-रेलवेकी जो लाइन गयी है, उसीके ऊपर "सतना" एक सुन्दर ष्टेशन है। सतनामें बघेलखण्ड-प्रदेशकी पोलिटिकल एजेन्सी है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सतनासे प्रायः ५० मील पश्चिमको ओर चलकर, पन्ना पहुँचा जाता है। बराबर पक्का रास्ता चला गया है । सन् १९०२ ई०के अक्तूबर मासमें, जब हम (लेखक—गङ्गाप्रसाद गुप्त) दूसरीबार बम्बईसे लौट रहे थे, उस समय हमको इस स्थानके देखनेका सुयोग प्राप्त हुआ था । इस जगह, रीवाँके महाराजकी एक सुन्दर कोठी है । महाराजकी अनुमतिसे, इसी कोठीमें २७ वीं दिसम्बर (१९०१ ई०) को पहलेपहल कमिशनकी बैठक हुई थी । वादीपक्षके बचे हुए गवाहोंके इजहार समाप्त होनेपर, बैरिष्टर कालविनने स्वयं महाराज माधवसिंहको इज़हार देनेके लिये उपस्थित किया । तीन दिनमें महाराजका इज़हार समाप्त हुआ। महाराजकी बातोंसे बहुतसे भेद खुल गये, परन्तु कमिश्नरोंने उनकी सब बातोंपर विश्वास नहीं किया। मि: कालविनने, पहले, आगरा और अवधके युक्तप्रदेशके जेलखानोंके इन्सपेक्टर-जेनरल डाक्टर कर्नेल "हल"को, असामियोंके पक्षका पहला गवाह कहकर उपस्थित किया था। पीछे और कई लोगोंके इज़हार लिये गये थे।

सातवां परिच्छेद।

विचारका परिणाम।

विचारके समाप्त होनेपर, सतनेमें कमिश्नर प्रेमियर साहबने जो राय पढ़ी थी, उसका संक्षिप्त विवरण उस समय प्रायः सभी समाचारपत्रोंमें प्रकाशित हुआ था। कमलकुमारी, रसूल-मुहम्मद और लक्ष्मीप्रसादके विरुद्ध यथेष्ट प्रमाण न मिलनेके कारण, वे छोड़ दिये गये। अच्छेलाल और स्वयं महाराजके विरुद्ध जितने प्रमाण एकत्रित हुए थे, उनके अनुसार वे दोषी ठहराये गये। परिणाममें, अच्छेलालके लिये गवर्नर-जेनरलकी ओरसे प्राणदण्डकी आज्ञा मिली, और महाराजके सम्बन्धमें गवर्नमेण्टके पास एक स्वतन्त्र रिपोर्ट भेजकर, कमिश्नरोंने सतना परित्याग किया। १९०२ ई०के अप्रेल महीनेकी २२ वीं तारीखको, "इण्डिया गेज़ेट्"के एक अतिरिक्तपत्र (Supplement) में, गवर्नमेण्टके पास भेजी हुई कमिश्नरोंकी रिपोर्ट और उसके सम्बन्धमें श्रीमान् बड़ेलाटका मन्तव्य, और साथही साथ नीचे लिखी बात प्रकाशित हुई थी,—

"Whereas His Highness Maharaja Madho Sinha of Panna has, after enquiry by a duly appointed Commission, been found guilty of having instigated certain persons to poison his uncle, the late Rao

Raja Khuman Sinha of Panna the Governor-General in Council hereby declares that His Highness Maharaja Madho Sinha is deposed from the chiefship of the Panna State and is deprived of all rights, honours and privileges thereto apertaining. Madho Sinha will be interned under surveillance in a place hereafter to be selected where suitable arrangements will be made for his residence. The necessary steps will be taken to select a successor to the chiefship of the State. The Governor-General in Council will make known hereafter the name of the person so chosen."

इसका भावार्थ यह है,—"पन्नाके महाराज माधवसिंहने अपने चचा रावराजा खुमानसिंहको हत्या करानेके लिये कई आदमियोंको उत्तेजित किया था; यह बात कमिशनको जाँचसे प्रमाणित हुई है। अतएव एतद्द्वारा वे सिंहासनच्युत किये जाते हैं। किसी उपयुक्त स्थानके चुन लिये जानेपर, वहां वे नजरबन्दीमें रखे जायँगे। उनके सिंहासनका उत्तराधिकारी कौन होगा; यह बात शीघ्रही स्थिर करके, श्रीमान् बड़ेलाट प्रकाश करेंगे।"

कमिश्नरोंकी रिपोर्टका मर्म्म यह है कि, उन्होंने जिन बातोंको सत्य समझा था, उनमेंसे बहुतोंका महाराज माधवसिंहने प्रतिवाद किया है। महाराज कहते हैं कि, रावराजाकी मृत्युके पश्चात् उनके जिन कामोंपर सन्देह

किया गया है, उन सबको वे पोलिटिकल-एजेण्टके डरसे करनेके लिये बाध्य हुए थे। उन्होंने यह भी कहा है कि, अपने बैरिष्टरसे मुलाकात न होनेतक, बेविलसाहबके अनुरोध करनेपर भी, उनसे सब बातें सत्य सत्य कह देनेका साहस उनको नहीं हुआ। कमिश्नरोंका यह विश्वास है कि, महाराजने उनके साम्हनेभी सब बातें सत्य सत्य न कहीं; क्योंकि जो महाराज माधवसिंह कमलकुमारीके लिये "रानी"की पदवी लेनेका एजेन्सीमें उद्योग कर सके थे, जो महाराज कुछ दिन पहले हरनामसिंहके मुकद्दमेके समय बेविलसाहबसे सहायता ले सके थे, वेही इस समय बेविलसाहबके आगे सच्ची बात कहनेका साहस न कर सके, इसपर कौन विश्वास कर सकता है ?

महाराजके बैरिष्टर कालविन साहबने कहा कि, जिस तारीखको रावराजाकी मृत्यु हुई, उस दिन प्रातःकालही महाराज, पन्नाको लौट आये थे, इससे उनकी निर्दोषता झलकती है, क्योंकि यदि उनकी इच्छा होती, तो वे एक या दो दिनका विलम्ब करकेभी पन्ना आ सकते थे, और यदि ऐसा होता तो कोई उनके विरुद्ध कुछ कह भी न सकता।" दूसरे पक्षके बैरिष्टर वेलक् साहबने इसके उत्तरमें यह कहा कि, "उस दिन और उसके बाद महाराजका पन्नामें रहना बहुतही आवश्यक था; क्योंकि यदि वे उपस्थित न रहते, तो हत्याकारियोंकी रक्षा कौन करता ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और यदि उसदिन वे पन्ना में न रहते, तो शम्भू अवश्य पकड़ा जाता और लाशको नौगच्छ जानेसे रोकनेका साहस कोईभी न करता।" मि: कालविनने एक बात यहभी कही कि, महाराजने उस भोजन और वमित पदार्थ को, जिसमें विष मिला हुआ था और जिसे रावरानियोंने अपने पास छिपा रखा था, लेनेकी कोई चेष्टा न की।" इस बातका यह उत्तर दिया जा सकता है कि, महाराज माधवसिंह, डाक्टर श्रीनाथघोषकी बातोंपर विश्वासकर, इस ओरसे निश्चिन्त थे। उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि रावरानियोंने बचा हुआ मांस छिपा रखा है। यदि वे इस बातको जानते थे और उनको यह विश्वासभी था कि भविष्यत्में इसके द्वारा उनकी हानि होगी, तो वे यह समझते थे कि उस मांसको रावरानियोंसे लेलेना सहज नहीं है, वरन् वे इस कामके लिये सुयोग ढूंढ़ रहे थे, इतनेमें समाचार आयाकि एजेन्सी-सर्जन पन्नामें आते हैं। अतएव उस समय किसी प्रकारका बलप्रयोग करनेका अवसर उनको न मिला। विशेषकर, उसदिन महाराजने अन्यान्य जो काम किये थे, उनपर विचार करनेसे, उनके निर्दोष होनेका कोई प्रमाण नहीं मिलता। कमिश्नरोंने औरभी कई युक्तियोंसे इस बातके प्रमाणित करनेकी चेष्टा की, कि यह बात एकबारही निर्मूल है कि महाराज, रानी कमलकुमारीका दोष

ढाँकने जाकर, स्वयं विपद्में पड़ गये । महाराजने स्वयं इस हत्यामें सहायता पहुँचायी । अच्छेलाल आदिको विश्वास था कि, जब महाराज स्वयं इस कार्यमें सहायता देनेके लिये तय्यार हैं, तब हमलोग निश्चिन्ततासे यह हत्याकार्य्य समाप्त कर सकेंगे । अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि महाराज स्वयं इस पापमें लिप्त थे ।

It occurred to us that possibly the Maharaja being innocent had suspected Kamal Kuar of complicity in the murder and that his conduct was due to a desire to screen her. We have carefully considered this. In our opinion the proved facts show that Achhe Lal and Shambhu knew that they had the authority of the Maharaja at their back, and they would be protected by him, as in fact they were. Moreover if the Maharaja was not already aware of the facts, the slightest enquiry would have shewn him that Achhe Lal had procured the strychnia possibly before, but certainly not later than June 20th, and that Lakshmi Prasad had arranged to send Shambhu to the Raj Mandir on the 20th. The Maharaja must have known that Kamal Kuar did not return to Panna till 11 P. M. on the 19th and then only at his express wish. He could not have supposed that all the necessary plans for the murder were matured in one night and action taken on the very next day. We think that we may safe-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ly disregard the hypothesis that the Maharaja's conduct was due to a desire to shield Kamal Kuar. Mr. Colvin declined to discuss this theory. He said that the Maharaja had no ground for suspecting Kamal Kuar, and the Maharaja himself says that no one ever suggested to him that Kamal Kuar might be implicated, and therefore, he should prevent the Rao Ranis from taking the body to Nowgong. The expelled favourite Fida Ali was hinted at once but there is no evidence that this man was in the conspiracy or that the Maharaja suspected that he was. We feel that we may safely leave him out of consideration. So far as we know there is no other person whom the Maharaja had any ground for suspecting or any motive for screening. We cannot imagine any person save Kamal Kuar or himself, for him he would have done even what he admits having done, still less what we have found that he did. We find it impossible to explain the facts upon any hypothesis other than that the Maharaja was a member of the conspiracy to murder the Rao Raja. We regret, therefore, to have to report that, to the best of our judgement and belief, the imputation against him is true.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उपसंहार।

कमिशनकी रिपोर्ट प्रकाशित होनेसे पहले, श्रीमान् बड़े-लाटको महाराजकी ओरसे एक आवेदनपत्र (Memorial) प्राप्त हुआ। इस आवेदनपत्रको बेरिष्टर कालविन साहबने स्वयं लिख दिया था। किन्तु इससे कोई अच्छा फल न मिला; हां इसमें कोई सन्देह नहीं कि महाराजके बहुत रुपये खर्च हुए। कारण कि, इस मेमोरियल(Memorial) को तय्यार करनेके लिये मि: कालविन, मि: ओकनर और उनके दो सहकारी वकीलोंको प्रायः एक मासतक कल-कत्तेमें रहना पड़ा था। जो हो, गवर्नमेण्टने कमिशनके विचारको पसन्द किया। अच्छेलालको फाँसी दी जा चुकी है, और महाराज माधवसिंह, अपने पदसे पृथक् किये जाकर, केवल १२००) रु० वार्षिक वृत्ति पाते हैं!

मृत रावराजाके ज्येष्ठपुत्र महाराज यादवेन्द्रसिंह, गवर्नमेण्टके अनुग्रहसे, इस समय पन्नाके सिंहासनके अधिकारी हैं। आप सुयोग्य हैं, बुद्धिमान् हैं, परोपकारी हैं। आपका विशेष वृत्तान्त कभी फिर लिखेंगे।

इतिशम्।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका।

पाठक महाशय! यह पुस्तक श्रीयुक्त बाबू नगेन्द्र-नाथ बन्द्योपाध्याय बी॰ ए॰ प्रणीत "पाम्नार महाराजा" नामक ग्रन्थका भाषानुवाद है। अनुवाद करते समय हमने अपनी ओरसे कुछ बातें बढ़ा घटा दी हैं। अन्तमें हम हृदयसे मूल ग्रन्थकारकी कृतज्ञता स्वीकार करते हैं।

गङ्गाप्रसाद गुप्त।

(अप्रेल, १९०४ ई॰) बेनीलालका कटरा,

बनारस सिटी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust